thearyasamaj.org

ओ३म्

आर्य जगत्

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

रविवार, 14 दिसम्बर 2014 | आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा का साप्ताहिक पत्र | सप्ताह रविवार 14 दिसम्बर 2014 से 20 दिसम्बर 2014

पौ.कृ. 8 ● वि० सं०–2071 ● वर्ष 79, अंक 135, प्रत्येक मगंलवार को प्रकाश्य, दयानन्दाब्द 191 ● सृष्टि–संवत् 1,96,08,53,115 ● इस अंक का मूल्य – 2.00 रुपये

महात्मा हंसराज की पुण्य तिथि पर आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा तथा डी.ए.वी. समिति ने मनाया 'आस्था-पर्व'

डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल, साहिबाबाद में 15 नवम्बर, 2014 को महात्मा हंसराज की 150वीं पुण्य–स्मृति में आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा एवं डी.ए.वी. कॉलेज प्रबन्धकर्त्री समिति, नई दिल्ली के तत्वावधान में आयोजित 'आस्था पर्व' पर लगभग 12 हजार से अधिक आर्यों को संबोधित करते हुए अपने मुख्य संबोधन में श्री पूनम सूरी जी ने आर्य समाज की संक्षिपत व्याख्या करते हुए नई पीढ़ी से महामानवों द्वारा प्रशस्त मार्ग का अनुसरण करने का आग्रह किया। उन्होंने कहा–आर्य समाज ने सदैव समाज सेवा को ही अपना लक्ष्य माना है। इस अवसर पर समस्त डी.ए.वी. संस्थाओं द्वारा लगाए गए रक्तदान शिविर में 22000 से अधिक यूनिट रक्त संचयन कर इस महादान द्वारा जन–कल्याण हेतु दायित्व के निर्वहन की सराहना करते हुए उन्होंने युवा वर्ग से प्राकृतिक संसाधनों–जल, वन, वनस्पतियों एवं पर्यावरण को संरक्षित करने की प्रेरणा देते हुए ऊर्जा संरक्षण पर भी बल दिया। श्री पूनम सूरी जी ने अपनी ओजस्वी वाणी में कहा हम आर्य हैं अतः सदैव कर्म–रत रहना हमारे जीवन का संकल्प हो और वस्तुतः यही मानव जीवन की सार्थकता भी है।

इस पर्व पर सर्वप्रथम महायज्ञ द्वारा विश्व कल्याण की कामना की गई। इस भव्य कार्यक्रम में आस्था–ज्योति प्रज्ज्वलित कर महात्मा हंसराज का स्तवन किया गया। इस पुण्य–पर्व पर डी.ए.वी. कॉलेज प्रबन्धकर्त्री, समिति के पदाधिकारीगण, देशभर के डी.ए.वी. विद्यालयों एवं महाविद्यालयों के प्रधानाचार्यगण, संन्यासीगण एवं अनेक विशिष्ट गणमान्य अतिथियों ने मंच को सुशोभित किया। आर्य समाज के महान चिंतकों एवं समाजोद्धार में उत्कृष्ट योगदान हेतु संन्यासियों एवं महामानवों

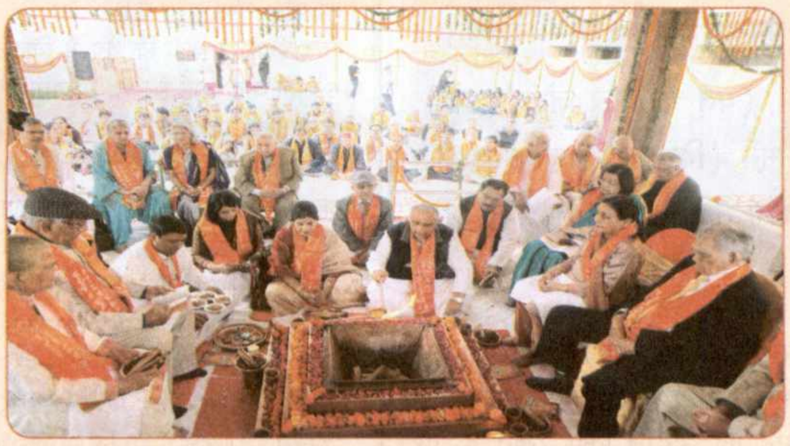

को सम्मानित किया गया।

डॉ.पी.एस.आहुजा–महानिदेशक वैज्ञानिक एवं औद्योगिक अनुसंधान परिषद्, भारत सरकार व श्री सोम मित्तल पूर्व अध्यक्ष, नेस्काम को उनके जीवन मूल्यों और उपलब्धियों के लिए विशेष रूप से सम्मलित किया गया।

इस अवसर पर श्री रामनाथ सैहगल जी को आजिवन उपब्धि समान प्रदान किया गया

सम्मानित सन्यासियों में स्वामी विवेकानंद

जी परिव्राजक–दर्शन योग महाविद्यालए रोजड़ (गुजरात), श्री माता निर्मला योगभारती, हैदराबाद, स्वामी आर्यवेश जी, दिल्ली, स्वामी सूर्यदेव जी महर्षि योग आश्रम, भटिण्डा (पंजाब), स्वामी धर्मदेव जी, गुरुकुल कालवा (हरियाणा) तथा आर्य विद्वानों में डॉ. महावीर अग्रवाल–उपकुलपति, संस्कृत विद्यापीठ, हरिद्वार, आचार्या सूर्यादेवी जी, शिवगंज, सिरोही, डॉ. ज्वलंत शास्त्री, अध्यक्ष–संस्कृत विभाग, श्री रणंजय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, अमेठी, डॉ. राजू वैज्ञानिक, दिल्ली एवं डॉ. सुरेन्द्र कुमार अध्यक्ष–दयानंद पीठ दयानंद विश्वविद्यालय, रोहतक (हरियाणा) थे। डी.ए.वी. शिक्षा संस्थाओं में अपने उल्लेखनीय योगदान हेतु चयन किए गए प्रधानाचार्यगण भी इस अवसर पर सम्मानित किए गए जिनमें श्रीमती रेखा भारद्वाज–प्रधानाचार्या, हंसराज महिला विद्यालय, जालंधर, पंजाब, श्री अंग्रेज सिंह बोपाराय प्रधानाचार्य, डी.ए.वी. सी.से. स्कूल कादियां, गुरदासपुर, पंजाब, श्री एस.आर. प्रभाकर–प्रधानाचार्य, डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल, भूपिंदर रोड पटियाला, पंजाब, श्रीमती अनीता चोपड़ा–हैडमिस्ट्रेस, डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल, आर.के.पुरम्, दिल्ली थे तथा मेधावी एवं खेलकूद में उपलब्धि प्राप्त छात्रों में क्रमशः अर्पण कुकरेजा–डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल, सेक्टर–14, फरीदाबाद, पुरंजय सिंगल–हंसराज मॉडल स्कूल, पंजाबी बाग, नई दिल्ली, अभिलाष बिस्वास–डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल चंद्रशेखर पुर, भुवनेश्वर, श्रीमोई सरकार–डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल, प्रदीप पीपीएल टाउनशिप परादीप, ओडिशा, अभिषेक वर्मा, श्रेयासी सिंह, रवि कुमार, अंकुर मित्तल, संग्राम दहिया, एवं श्वेता चौधरी थे।

इस अवसर पर साप्ताहिक 'आर्य जगत्' तथा अग्रेज़ी मासिक पत्रिका 'आर्यन हैरिटेज' के विशेषांकों का विमोचन भी किया गया।

इस पुण्य पर्व पर डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल साहिबाबाद के लगभग 2000 विद्यार्थियों ने महामानव हंसराज के जीवन दर्शन पर आकर्षक नृत्य–नाटिका प्रस्तुत की जिसने दर्शक–दीर्घा में बैठे हजारों दर्शकों को मंत्र–मुग्ध कर दिया।

राष्ट्रीय आध्यात्मिक नेता स्वामी सुमेधानंद जी दयानंद मठ, चम्बा ने गरिमामयी उपस्थिति से तथा आशीर्वचनों की पावन वर्षा से मानव धर्म का पालन करने की प्रेरणा पाकर जन समूह भाव–विभोर हो उठा। कार्यक्रम का समापन शांतिपाठ से हुआ।

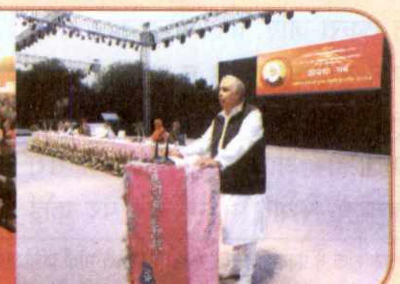

स्वजातीय या विजातीय ईश्वर अथवा अपने आत्मा में तत्त्वान्तर वस्तुओं से रहित एक होने से वह 'अद्वैत' है। – स. प्र. समु. १

संपादक – श्री पूनम सूरी

hearyasamaj.org

ओ३म्
आर्य जगत्
सप्ताह रविवार 14 दिसम्बर, 2014 से 20 दिसम्बर, 2014

निर्भय बनूँ

●डॉ. रामनाथ वेदालंकार

यदन्ति यच्च दूरके, भयं विन्दति मामिह।
पवमान वि तज्जहि।।

ऋग् ६.६४.२१

ऋषिः **मैत्रावरूणिः वसिष्ठः**। देवता **पवमानः सोमः**। छन्दः **गायत्री।**

● **(यत्)** जो, **(अन्ति)** समीप, **(यत् च)** और जो, **(दूरके)** दूर, **(इह)** यहाँ, **(मां)** मुझे, **(भय)** भय, **(विन्दति)** प्राप्त करता है, **(पवमान)** हे सर्वत्र–संचारी, पवित्रकर्ता सोम प्रभु!, **(तत्)** उसे, **(वि जहि)** विनष्ट करो।

● मनुष्य प्राणियों में सबसे अधिक बुद्धिमान् होता हुआ भी सबसे अधिक भयशील है। अन्य सब पशु, पक्षी, सरीसृप, कीट, पतंग आदि जन्तु भयावह जंगलों में भी निर्भय विचरते हैं। पर मानव घर में भी भयभीत रहता है, दंश, मशक, वृश्चिक, सर्प, आधि, व्याधि, चोर, शत्रु, शासक आदि के भय से व्याकुल रहता है। ये भय आत्म–विश्वास और प्रभु–विश्वास की कमी के कारण होते हैं।

मैं भी समीप के और दूर के अनेक प्रकार के भयों से घिरा हुआ हूँ। समीप में मुझे अपने पड़ोसियों से, साथी–संगियों से, यहाँ तक कि घर के सदस्यों से भी भय लगा रहता है कि ये कहीं मेरा कुछ अनिष्ट न कर दें। अपने मन में सन्देह का बीज बोकर मैं सोचता हूँ कि कहीं ये मेरी हत्या न कर दें, मेरा धन न हड़प लें, मेरा रथ न हर लें। नींद में भी मुझे चोरों के सपने आते है। दूर जाता हूँ। दूर जाता हूँ तो वहाँ भी भय पीछा नहीं छोड़ता। सोचता हूँ कहीं रेलगाड़ी न टकरा जाए, कहीं मोटरकार आदि यान दुर्घटना–ग्रस्त न हो जाए, कहीं लुटेरे मुझे लूट न लें, कहीं मेरे दूर यात्रा पर आये होने के कारण मेरी अनुपम स्थिति में परिवार पर कोई संकट न आ जाए। ये सब तो ऐसे भय हैं, जो व्यर्थ ही मेरे शंकाशील मन को उद्विग्न किए रखते हैं; पर इनके अतिरिक्त कई भय सचमुच के भी होते हैं, जिनके भय का कारण वास्तव में उपस्थित होता है। उस समय भी मैं भय–कारणों का प्रतीकार करने के स्थान पर भयग्रस्त हुआ निष्कर्मा खड़ा रहता हूँ। मैं इतना भयशील हूँ कि मुझे सन्ध्या–वन्दन आदि सत्कर्म करते हुए भी भय व्यापे रहता है कि कहीं कोई मेरा उपहास न करे।

इन दूर के तथा समीप के सभी भयों को हे मेरे प्रभु! तुम्हीं दूर कर सकते हो। तुम्हारा सच्चा ध्यान मेरे अन्दर आत्म–संबल उत्पन्न कर सकता है। तुम 'पवमान' हो, सर्वत्र–संचारी, सर्वव्यापी और अन्तःकरण को पवित्र करनेवाले हो। तुम सर्वत्र मेरे चित्त की भय–दशा को जानकर और उससे मुझे मुक्त कर पवित्र करते रहो। हे पवित्रता के देव! तुम मेरे भयों को समूल विनष्ट कर दो, जिससे फिर कभी भय मेरे मानस को आक्रान्त न कर सके। समीप और दूर के सब स्थानों को, सब दिशाओं को, मेरे लिए निर्भय कर दो। ❑

वेद मंजरी से

इस अंक में प्रकाशित सभी लेखों में व्यक्त भावों व विचारों के लिए लेखक स्वयं उत्तरदायी हैं और इसमें किसी आपत्तिजनक बात के लिए 'सम्पादक' एवं 'आर्य जगत्' उत्तरदायी नहीं होगा।

एक ही रास्ता

● महात्मा आनन्द स्वामी

पिछले अंक में बात हो रही थी कि अष्टांग योग की कुछ सीढ़िया पार करने के बाद जब समाधि की अवस्था में पहुंच जाओ और वह महान ज्योति आपके समक्ष हो तो उससे क्या मांगा जाए। सामवेद के मंत्र का हवाला देते हुए स्वामीजी ने कहा कि उस समय महान शक्ति से 'मेधा' को मांगो। मेधा, जो वह बुद्धि है जो भूलती नहीं, जिसमें आई बात फिर कहीं जाती नहीं। स्वामीजी ने कहा कि मांगने की तो बहुत सी वस्तुएं हैं–धन–दौलत, जायदाद आदि। लेकिन यदि बुद्धि न हो तो ये सब वस्तुएं मार्ग से गिरा देने वाली हैं। धन अच्छा है, भक्ति अच्छी है, स्वास्थ्य अच्छा है लेकिन तब, जब वे मर्यादा में रहें। शास्त्रों ने 'अति सर्वत्र वर्जयेत' कहकर इसी मर्यादा में रहने की बात कही है। और इस मर्यादा को बताने वाली, स्थिर रखने वाली बुद्धि मेधा बुद्धि है।

स्वामीजी ने कहा कि वेद में कितने ही मंत्र ऐसे हैं जिसमें सूर्य से मेधा बुद्धि मांगने की बात आई है। यह भी बताया कि यह मेधा बुद्धि, सुबुद्धि और कुबुद्धि से आगे चलकर प्राप्त होती है। इसे प्रज्ञा और प्रतिभा भी कहते हैं। सृष्टि के आरम्भ से ऋषियों के अन्दर यही प्रतिभा नाम की बुद्धि भी है जिसे 'ऋतंभरा' कहा जाता है जो समाधि की अवस्था को प्राप्त हुए व्यक्ति को दिखाई देती है। यह ऐसा सत्य है जो कभी बदलता नहीं। स्वामीजी ने ऋत और सत्य का अन्तर भी बताया और इसके साथ ही यह बुद्धि कैसे प्राप्त होगी। इसकी ओर संकेत करते हुए गायत्री मंत्र का उच्चारण किया और कहा कि इस महामंत्र से प्रार्थना करने वाला ईश्वर से बुद्धि को प्रेरित कर सतर्मार्ग पर ले चलने की बात करता है। उन्होंने बताया कि चौबीस अक्षरों वाला यह मंत्र 'महामंत्र' कहलाता है और इससे भी एक छोटा मंत्र है 'ओ३म्', जिसके निरंतर जाप करने की बात यजुर्वेद में आई है। इस विषय में मन के न लगने का बहाना बनाने वाले लोगों को सुझाव देते हुए स्वामीजी ने यह जाप निरंतर करते रहने की प्रेरणा दी और बताया कि जैसे हलवाई की कढ़ाई में उबलते हुए खांड की चाशनी में से धीरे–धीरे मैल निकल जाती है, उसी प्रकार इस मंत्र का जाप करते रहने से मन की मैल भी निकल जाती है और मन पवित्र होकर स्थिर होने लगता है।

अब आगे

यही दशा तो हमारे मन की भी है। मन नहीं लगता, उचटता है, भागता है, तो घबराओ नहीं। उफान उठेगा अवश्य। जब–जब उफान उठे, तब–तब ओ३म् के जाप का दूध डालते जाओ। मैल को काटते जाओ। धीरे–धीरे वह समय आएगा जब मैल नहीं रहेगी, जब यह मन शुद्ध और निर्मल हो जाएगा। मैल से घबराओ नहीं। जन्म–जन्म की मैल है यह। इसे बाहर निकालना है। एक दिन में यह निकलती नहीं, परन्तु अन्ततः निकलती अवश्य है और अन्त में शुद्ध और पवित्र चाशनी तैयार हो जाती है; और जो लोग कहते हैं कि हमें ईश्वर पर विश्वास है नहीं, उन्हें कैसे समझाऊँ?

बादशाह अकबर की बात सुनाता हूँ। बीरबल का नाम तो आप जानते हैं। बहुत विद्वान ब्राह्मण थे वे। अकबर के साथ रहते थे। स्वयं ईश्वर को याद करते थे, कई बार बादशाह को भी कहते थे– ''ईश्वर को याद करो।'' एक दिन बादशाह ने कहा– ''अच्छा बीरबल, तुम जो कहते हो ईश्वर को याद करूँ तो बताओ कि ईश्वर कहाँ रहता है? एक साथ तीन प्रश्न पूछ लिए उसने। तीनों बहुत कठिन। बीरबल चिन्ता में डूब गया; बोला, ''सात दिन का अवकाश दो, आपके सवालों का उत्तर सातवें दिन दूँगा।'' परन्तु उत्तर देना कहाँ सरल है! छः दिन बीत गए। बीरबल को उत्तर नहीं सूझा। सातवें दिन चिन्ता में डूबा बैठा था वह, तभी उसके नन्हे बेटे ने आकर कहा, ''पिताजी, आप चिन्ता में क्यों हैं? बीरबल ने कहा, ''बादशाह ने तीन प्रश्न पूछे हैं, उनका उत्तर नहीं मिलता।'' प्रश्न भी बता दिए उसको। नन्हा–सा बालक बोला, ''वाह! इतनी सी बात की चिन्ता है आपको? इनके उत्तर तो मैं बता सकता हूँ।'' बीरबल ने कहा, ''बताओ।'' बेटे ने कहा, ''आपको नहीं, बादशाह को बताऊँगा, मुझे उनके पास ले चलो।'' बीरबल बेटे को लेकर बादशाह के पास पहुँचा; बोला– ''श्रीमान्, आपके सवालों का उत्तर यह नन्हा बालक देगा।'' बादशाह ने आश्चर्य से बालक की ओर देखा; बोले, ''इतने कठिन प्रश्न, उत्तर देगा यह बालक!'' फिर बोले, ''अच्छा बच्चे, बताओ हमारे प्रश्नों का क्या उत्तर है?'' बच्चे ने कहा, ''बादशाह! तुम भारत में नए–नए आए हो, भारत की संस्कृति को जानते नहीं। भारत की संस्कृति यह है कि कोई आदमी मिलने के लिए आए तो पहले उसे खिला पिलाकर उसका सत्कार करो, बाद में उससे बातें करो। यह एकदम से उत्तर पूछने का रिवाज भारत

thearyasamaj.org

का रिवाज नहीं है। बादशाह ने झेंपकर कहा, ''अच्छा बोलो तुम क्या खाओगे?'' बच्चे ने कहा, ''मैं तो छोटा–सा बालक हूँ, मुझे दूध ही अच्छा लगता है। बादशाह ने कटोरे में दूध मँगवाया। आ गया दूध; बच्चे को देकर कहा, ''पियो बच्चे!'' बालक ने कटोरे को लेकर उसके अन्दर झाँका, इधर–उधर उसको देखा, फिर अँगुली डालकर उसमें से कोई वस्तु ढूँढने लगा। बादशाह ने कहा, ''यह क्या करते हो बालक? दूध को पीते क्यों नहीं?'' बच्चे ने कहा, ''बादशाह, मैंने सुना है कि दूध में मक्खन होता है, परन्तु इस दूध में मक्खन तो दिखाई नहीं देता?'' बादशाह ने हँसकर कहा, ''तुम अभी बच्चे हो। अरे, मक्खन इसके अन्दर अवश्य है, उसे देखना हो तो दूध को दही में डालकर जमाना पड़ता है, दही बन जाए तो उसमें मथनी डालकर मथना पड़ता है, बिलोना पड़ता है। जब बहुत जोर से बिलोया जाता है, तब मक्खन ऊपर आता है।''

बच्चे ने कहा, ''सुनो बादशाह! तुम्हारे पहले दो सवालों का जवाब यही है। ईश्वर है सब जगह। इस संसार के कण–कण में रहता है वह, परन्तु दर्शन तब होते हैं जब मन को ओ३म् के जाप का दही डालकर जमाया जाता है। फिर धारणा, ध्यान और समाधि की मथनी से बिलोया जाता है। तब भक्त अपने हृदय में भगवान् को अपने समक्ष देखता है, स्पष्ट रूप में देखता है। तब भगवान् के दर्शन होते हैं, निश्चित रूप में होते हैं।''

बादशाह ने कहा, ''वाह रे बालक! मेरे दो प्रश्नों का उत्तर दे दिया तुमने। मेरा सन्देह दूर हो गया। अब बताओ यह ईश्वर क्या करता है?''

बच्चे ने कहा, ''यह बात गुरु बनकर पूछते हो या शिष्य बनकर?''

बादशाह ने कहा, ''गुरु बनकर कोई नहीं पूछता, मैं शिष्य बनकर पूछता हूँ।''

बच्चे ने कहा, ''अद्‌भुत शिष्य हो तुम! गुरु नीचे पृथिवी पर खड़ा है और तुम ऊपर तख्त पर विराजमान हो!''

बादशाह लज्जित होकर जल्दी से नीचे उतर आया। बच्चे को तख्त पर बैठा दिया। हाथ जोड़कर बोला, ''अब बताओ, ईश्वर क्या करता है?''

बच्चे ने हँसकर कहा, ''यही करता है, ऊपरवाले को नीचे और नीचेवाले को ऊपर।''

और यह खेल क्या हमने अपनी आँखों से नहीं देखा? मैंने बड़े–बड़े राजा और महाराजाओं को बम्बई की गलियों में खाक छानते हुए देखा है। उन लोगों को जो कुछ वर्ष पूर्व जेलों के बन्दी थे, ताज और तख्त सँभालते, शासन करते देखा है। उस भगवान् की महिमा महान् है। कौन उसका वर्णन कर सकता है! जब सब लोग छोड़ जाते हैं, जब सभी आशाएँ समाप्त हो जाती हैं, तब भी वह मनुष्य के साथ रहता है, तब भी इसकी रक्षा करता है।

पिछले वर्ष अल्मोड़ा के रास्ते से मैं कैलास गया। अल्मोड़ा से 250 मील के अन्तर पर है कैलास। पाँच सौ मील पैदल चला मैं। तब देखा कि सब जगह भगवान् सहायता करते हैं। दस साथी थे मेरी यात्रा में– 9 बंगाली साधु, एक मद्रासी। भारत की सीमा पर अन्तिम पड़ाव है गरबियांग। वहाँ से हमने गाइड लिया, रोटी पकाने के बर्तन लिए, खाने का सामान लिया, तम्बू लिए और अब चली यह पार्टी। तिब्बत की सीमा को पार करके पिस्सुलेक घाटी में पहुँच गई जो 16,500 फीट ऊँची है– बर्फ से लदी हुई है। हर तरफ बर्फ ही बर्फ दिखाई देती है वहाँ। उस घाटी को लाँघकर हम आगे बढ़े। मानसरोवर पहुँच गए। मैं हूँ 'खुशहाल'। हर समय हँसता रहता हूँ। लोगों को हँसाता रहता हूँ। सबकी सेवा भी करता हूँ। मेरे इस स्वभाव और सेवाभाव को देखकर दस के दस साथी बोले, ''आनन्द स्वामी, हम तो सर्वदा तेरे ही साथ रहेंगे।''

पन्द्रह हजार फीट की ऊँचाई पर है मानसरोवर। 54 मील इसका घेरा है। प्रकृति का सौन्दर्य वहाँ खेलता है, नाचता है। शीतल नीला जल वहाँ जैसे निमन्त्रण देता है– ''आओ, मेरी गोद में आओ!''

मैंने अपने बंगाली साथियों से कहा, ''आओ इसमें स्नान करें।''

वे बोले, ''नहीं आनन्द स्वामी, पहले तू नहा।''

मैंने उन्हें अपने गाँव की एक बात सुनाई। बताया कि पंजाब के देहात में हर ग्राम के निकट छोटा या बड़ा एक जोहड़ होता है जिसमें लोग नहाते हैं। एक दिन प्रातःकाल के समय सर्दी बहुत थी। तेज बरसाती हवा चल रही थी। एक पण्डित जी अपने घर से स्नान करने को चले। रास्ते में हवा से ठिठुर गए। जोहड़ पर पहुँचे यह देखने के लिए कि पानी कितना ठण्डा है, पाँव के अगले हिस्से को जिसे पंजाबी भाषा में 'पब' कहते हैं, पानी में डाला। पानी था ठण्डा, बर्फ के समान। जल्दी से पाँव को बाहर निकालकर बोले, ''पब स्नान सब स्नान'' अर्थात् पाँव ने नहा लिया तो सारे शरीर ने नहा लिया। जूता पहनकर वापस आ गए। आ रहे थे तो आगे एक और पण्डित जी मिले। वे भी नहाने जा रहे थे। उन्होंने कहा, ''क्यों भाई, नहा आए?'' पहले पण्डित ने कहा, ''पब स्नान सब स्नान।'' दूसरे पण्डित ने कहा, ''तुझ स्नान तो मुझ स्नान।'' अर्थात तूने नहा लिया तो मैंने नहा लिया और यह कहकर वापस चल पड़ा। मैंने हँसते हुए कहा, ''तुम भी क्या ऐसा ही स्नान करोगे?''

और गौरीकुण्ड पहुँचे तो वहाँ और भी अधिक सर्दी थी। मैं हूँ सहनशील। 18,000 फीट ऊँचा गौरीकुण्ड। मैंने बर्फ के तोदों को इधर–उधर हटाया। एक कमण्डल भरकर शरीर पर डाला, सुन्न हो गया शरीर। दूसरा कमण्डल डालने का साहस नहीं हुआ। मेरे साथियों ने कहा– ''तू दूसरा कमण्डल नहीं डालता, हम पहला भी नहीं डालेंगे।''

इस प्रकार हँस–हँसकर यात्रा करते रहे– ग्यारह साथी जो बिछड़ने का नाम नहीं लेते थे। परन्तु वापस आती बार, पिस्सुलेक घाटी में बर्फ से जो मैं फिसला तो दूर तक फिसलता चला गया। बर्फ के एक तोदे ने रोक लिया मुझे, नहीं तो आज करौलबाग न आना पड़ता, अफ्रीका के नगरों और जंगलों में भी न जाना पड़ता, वहीं शान्ति हो जाती सदा के लिए। बर्फ ने गिराया मुझे, बर्फ ने ही बचाया। परन्तु उठने का प्रयत्न किया तो देखा एक पाँव टूट गया है। उठ भी नहीं सकता।

यत्न करके उठा। दिल ने कहा, 'चल आनन्द स्वामी, एक पाँव टूट गया तो क्या हुआ, दूसरा तो है। चल नहीं सकता तो बैठ जा।' गाइड को बुलाया; उससे कहा, ''मुझसे चला नहीं जाता।'' गाइड ने कहा, ''आप यहीं बैठिए, मैं गरबियांग से झब्बू लेकर आता हूँ।'' झब्बू बैल–जैसे उस जानवर को कहते हैं जिस पर बैठकर तिब्बत में यात्रा की जाती है।

घण्टों व्यतीत हो गए बर्फ में बैठे। तब झब्बू आया। उस पर बैठकर मैं गरबियांग पहुँचा। वहाँ पहुँचकर देखा– मेरे दस साथियों में से छः छोड़कर आगे चले गए हैं। आनन्द स्वामी मर गया है या जीवित है, यह देखने का भी यत्न नहीं किया उन्होंने। दूसरे दिन शेष चार साथी भी चले गए। एक घायल फकीर के लिए वे रुक नहीं सकते थे। कहते थे, सदा तेरे साथ रहेंगे। एक दिन भी साथ नहीं रह सके।

गरबियांग में पड़े–पड़े तीन दिन बीत गए। मेरे गाइड कीचखम्बा ने कहा, ''स्वामी, कब तक यहाँ पड़े रहेंगे? रास्ते बन्द हुए जाते हैं। थोड़े दिनों में बर्फ पड़ने लगेगी, फिर वापस जाने का कोई रास्ता नहीं रहेगा। एक डाण्डी कर लो। उसमें सवार होकर चले जाओ।

उसके कहने पर डेढ़ सौ रुपये में एक डाण्डी की। उस पर बैठा। आठ मजदूरों ने डाण्डी को उठाया। जंगल में पहुँचे हम लोग। शाम हो गई थी। आगे काली नदी थी। जंगल में शेर बार–बार गर्ज उठते थे। मजदूरों ने कहा, ''इस समय हम आगे नहीं जाएँगे।'' मैंने कहा, ''मत जाओ''।

उन्होंने लकड़ियाँ इकट्ठी करके मेरे पास आग जला दी जिससे जंगली जानवर निकट न आएं। वे भी सो गए, मैं भी सो गया। प्रातःकाल उठकर देखा कि आठ के आठ मजदूर पता नहीं कहाँ चले गए। अपनी डाण्डी भी छोड़ गए थे। मैंने समझा– कहीं इधर–उधर गए होंगे, अभी आ जायेंगे; परन्तु देर हो गई, वे नहीं आए। तब मैंने समझा कि वे डरकर भाग गए हैं और इस सुनसान जंगल में मैं अकेला रह गया हूँ– अकेला और इस दशा में कि एक पग भी चल नहीं सकता। कमण्डल को देखा– वह आधा पानी से भरा था, और नदी थी वहाँ से आधा मील दूर नीचे। बैग में देखा– उसमें केवल छः बिस्कुट थे। थोड़ा सा पानी पिया और दो बिस्कुट खाके मैं पड़ा रहा। एक दिन गया, दूसरा दिन भी, तीसरा दिन भी। जंगली पशु निकट आकर चले जाते थे। बिस्कुट समाप्त हो गए, पानी भी। अब केवल जीवन समाप्त होना बाकी था कि तीसरे दिन की शाम को छः कुली काली नदी को पार करने वहाँ आ गए। मुझे देखकर आश्चर्य से बोले ''तुम कौन हो? कैसे यहाँ पड़े हो?'' उन्हें अपनी सारी कहानी सुनाई। वे बोले– ''अभी तो हम गरबियांग जा रहे है, तीन दिन बाद आएँगे। तुम्हें काली नदी के पार अल्मोड़ा ले जाएँगे।''

तीन दिन की रोटियाँ बनाकर वे मुझे दे गए। तीन दिन के लिए पानी भरकर भी दे गए। ''उस सुनसान उजाड़ जंगल में किसने भेज दिया उनको?'' मैंने उनसे पूछा। वह उनका आम रास्ता नहीं था। काली नदी के जिस घाट से वे प्रायः आते थे, वह वर्षा के कारण टूट गया था। विवश होकर उन्हें इस रास्ते पर आना पड़ा। किसने तोड़ दिया वह घाट? किसने पहुँचा दिया उनको मेरे पास? प्रभु के अतिरिक्त कौन उस समय मेरे साथ था? साथी चले गए थे। डेढ़ सौ रुपया लेने वाले मजदूर भाग गए थे। परन्तु आनन्द स्वामी का वह महान प्रभु, जो कभी कहीं जाता नहीं, उसने छः व्यक्तियों को ठीक उस दिन मेरे पास भेज दिया जब सब–कुछ समाप्त हो गया था।

छः दिन उस जंगल में बैठा रहा मैं। पाँव हिलता नहीं था। वे कुली आए, सहारा देकर मुझे अपने साथ ले चले। इनकी सूचना ठीक थी। काली नदी के उस पार पहाड़ टूट गया था। रास्ता टूट गया था। ऊपर जाने का कोई मार्ग न था। तभी एक कुली ने कहा, ''एक रास्ता है। हम लोग दूसरे रास्ते से ऊपर जाएँगे। ऊपर से रस्सा नीचे लटका देंगे। तुम अपने को रस्से के साथ बाँध लेना, हम तुम्हें ऊपर खेंच लेंगे।'' ऐसा ही किया उन्होंने; जैसे कुएँ से बाल्टी खेंचते हैं, इस प्रकार खेंचा उन्होंने मुझे। परन्तु कुएँ की दीवार तो होती है सीधी, वह था पहाड़। कभी कोई चट्टान इधर आकर लगती, कभी उधर। बचता–बचाता मैं पहुँच गया ऊपर। परन्तु थोड़ी ही दूर जाने पर पता लगा कि आगे एक और पहाड़ टूट पड़ा है; सड़क बहकर खाई में चली गई है। केवल आधा फीट चौड़ा एक मार्ग है, इस पर से होकर दो फर्लांग जाना पड़ेगा। पहले कुली मुझे

शेष पृष्ठ 04 पर ☞

thearyasamaj.org

आर्य समाज के प्रति कुछ भ्रान्तियाँ और उनका निवारण

● खुशहाल चन्द्र आर्य

यह लेख एक आर्य जगत् के प्रसिद्ध विद्वान आदरणीय राम निवासजी ''गुणग्राहक'' द्वारा लिखित एक लघु पुस्तिका ''जानें आर्य समाज को'' शीर्षक से उद्घृत किया है। यह आर्य समाज को समझने के लिए एक अच्छी पुस्तक है। इसमें विद्वान लेखक ने आर्य समाज क्या मानता है, और क्या नहीं मानता, इस विषय को बड़ी सरल भाषा में रोचक ढंग से समझाया है। जिसको पढकर एक जिज्ञासु व्यक्ति आर्य समाज को अच्छी प्रकार समझ सकता है और आर्य समाज का सदस्य बन कर अपने जीवन को वेदानुसार चला कर अपने व दूसरों के जीवन को सुखी व समृद्धशाली बना सकता है। इस पुस्तक में आर्य समाज के प्रति लोगों की भ्रांतियाँ तथा उनका निवारण भी लेखक ने अपनी बुद्धि से बड़े अच्छे ढंग से किया है। इस पुस्तक को उपयोगी और लाभदायक समझ कर भ्रांतियों संबंधी कुछ अंश इस लेख द्वारा प्रकाशित करने का प्रयास किया है। पाठकगण इससे लाभ उठाएँगे और मेरे परिश्रम को सफल करेंगे।

भ्रांतियाँ तथा निवारण इस भाँति–

1 भ्रांतिः– आर्य समाज मूर्तिपूजा को नहीं मानता, इसलिए मूर्तिपूजक आर्य समाज को नास्तिक (ईश्वर को न मानने वाला) कहते हैं।

सच्चाईः– संसार में आर्य समाज ही एक मात्र ऐसी संस्था है, जिसके नियमों में परमात्मा के गुण, कर्म, स्वभाव और स्वरूप का सटीक परिचय देकर उनकी भक्ति व उपासना करने की सही प्रेरणा दी गई है। परमेश्वर के सत्य स्वरूप को जानने समझने के लिए हमारे पास वेद ही एक मात्र साधन है। वेद को पढ़े समझे बिना हम न तो धर्म को समझ सकते हैं और न परमात्मा को। इसलिए आर्य समाज के संस्थापक ऋषि दयानन्द ने तीसरे नियम में वेद को पढ़ना–पढ़ाना और सुनना–सुनाना धर्म ही नहीं, परम धर्म घोषित किया है। ऐसे में आर्य समाज को मूर्तिपूजा न करने के कारण नास्तिक कहना एक भ्रम है।, एक अज्ञान है। महापुरूषों की कल्पित मूर्तियाँ बनाकर मनमाने ढ़ंग से उनकी पूजा के नाम पर फूल–फल, मिठाइयाँ चढ़ाने वाले आज तक न तो वेदों में मूर्ति–पूजा का विधान ही दिखा सके और न तर्कों व प्रमाणों से मूर्ति पूजा को ईश्वर की भक्ति व उपासना प्रमाणित कर सके। आर्य समाज प्रारंभ से लेकर आज तक अपने सब सिद्धांतों, सब मान्यताओं को हर दृष्टि से वेद के अनुकूल और सत्य सिद्ध करता रहा है। ऐसे में प्रत्येक विचारशील सज्जन का यह नैतिक और मानवीय कर्त्तव्य है कि वह आर्य समाज की ईश्वर संबंधी विचारधारा को जाने–समझे और मूर्ति पूजकों की मनमानी कल्पनाओं के साथ तुलना करके सत्य को स्वीकार करें।

2 भ्रांतिः– मूर्ति–पूजा के दूसरे रूपों जैसे कि काली, दुर्गा, भैरव, शनि, साईंबाबा आदि कल्पित देवी–देवताओं का विरोध करने के कारण, आर्य समाज को देवों की पूजा न करने, न मानने वाला भी कहा जाता है। सच्चाईः– हमारे यहाँ प्राचीन शास्त्रों में कहा गया है– मातृदेवो भव, पितृदेवो भव, आचार्यदेवो भव, अतिथिदेवो भव आदि वाक्य आपको वैदिक ही नहीं पुराण–पन्थी साहित्य में भी मिल जाएँगे। ऐसे वचन स्पष्ट बतातें हैं कि माता देव है, पिता देव है, आचार्य और अतिथि देव हैं। इनके देव होने से किसी को सन्देह नहीं। पाँचवां देव पत्नी के लिए पति है, पति के पत्नी भी देवी है। इन पाँच की पूजा–सत्कार का विधान सर्वत्र है और व्यावहारिक भी है। देव का सीधा अर्थ होता है देने वाला। माता–पिता हमें जीवन उपदेश देते हैं। पति–पत्नी तो अपना तन, मन, धन और जीवन ही एक दूसरे को दे डालते हैं। ऐसे देवी–देवताओं की श्रद्धा व सम्मान पूर्वक पूजा–सत्कार और सद्व्यवहार करना ही सर्वमान्य और सच्ची देव पूजा है। यज्ञ का तो एक नाम ही ''देवपूजन'' है। प्राकृतिक देवों–पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु और आकाश की पूजा (शुद्धि) यज्ञ से ही होती है। आर्य समाज जीवन से जुड़े हुए इन देवों की पूजा करता कराता है। ऐसे देव–पूजक आर्य समाज को देवी–देवताओं की पूजा का विरोधी कहने वाले विचार करके देखें तो उनका स्वयं का ह्रदय कह उठेगा कि वे स्वयं इन सच्चे देवों की पूजा न करने के कारण देव पूजा से वंचित है।

3 भ्रांतिः– कुछ लोग कहते हैं कि आर्य समाज श्री राम और श्री कृष्ण, हनुमान आदि को नहीं मानता।

सच्चाईः– श्री राम और श्रीकृष्ण आदि के कल्पित चित्र व मूर्तिकार, उन पर फल–फूल, चावल, मिष्ठान चढ़ाना ही श्री राम, श्री कृष्ण आदि का मानना है तो आर्य समाज उन्हें नहीं मानता। दूसरी और वाल्मीकी रामायण और महाभारत में वर्णित उनके इतिहास को पढ़कर उनके प्रति श्रद्धा और सम्मान के भाव रखते हुए, उनके श्रेष्ठ गुण, धर्म कर्म, स्वभाव के अनुसार अपने गुण, कर्म, स्वभाव बनाना आदि उनका मानना है तो सच यह है कि श्री राम और श्री कृष्ण आदि को आर्य समाज ही मानता है। महर्षि बाल्मीकि ने रामायण लिखने का उद्देश्य बताया है– 'रामादिवत प्रवर्क्षितव्यं नतु रावणादिवत्।' अर्थात् मैं आने वाली पीढ़ियों को यह संन्देश देना चाहता हूँ कि वे राम की तरह जीवन जीए, रावण की तरह नहीं। ऐसा केवल आर्य समाज ही कहता और करता है। आर्य समाज श्री राम और श्री कृष्ण के चित्र की पूजा नहीं करता बल्कि चरित्र की करता है, जो सब को करनी चाहिए।

4 भ्रांतिः– एक भ्रांति यह है कि आर्य समाज श्राद्ध व तर्पण नहीं मानता।

सच्चाईः– आर्य समाज हर उस चीज को मानता है, जो सच हो, मानव जीवन के लिए उपयोगी हो। तर्क और विज्ञान से युक्त, बौद्धिक धर्म से हर तत्व को आर्य समाज मानता है। आँख बन्द करके बिना जाने व समझे किसी बात को मान लेना बुद्धिमान नहीं। श्राद्ध शब्द श्रद्धा से बनता है। सत्य को धारणा करने की हमारी आन्तरिक सामर्थ्य को श्राद्ध कहते हैं। प्रचलित श्राद्ध परम्परा, सत्य की कसौटी पर खरी नहीं उतरती। मर चुके अपने माता–पिता, दादा–दादी के नाम पर वर्ष में एक बार पण्डितों को भोजन खिला देना अधिक अच्छा है या जीवित माता–पिता, दादी–दादा को श्रद्धापूर्वक सेवा करना अधिक अच्छा श्राद्ध है। आर्य समाज तर्पण का तात्पर्य यानि सन्तुष्टि होता है जिसको आर्य समाज वृद्धों के सेवा करके उन्हें संतुष्ट करना मानता है।

5 भ्रांतिः– तीर्थों को न मानने का दोष भी आर्य समाज पर लगाते हैं।

सच्चाईः– तीर्थ शब्द का अर्थ होता है दुखों से तराने वाले कर्म। जैसे सत्य बोलना, विद्या का अभ्यास करना, सत्संग करना, उत्तम विचार रखना धर्मानुष्ठान, परमात्मा की भक्ति, ब्रह्मचर्य का पालन करना तथा विद्यादान आदि कर्म संसार सागर से तराने वाले कर्म होने से तीर्थ कहलाते हैं। वेद कहता है **उपह्वरे च गिरीणां संगमे च ददीनाम् धिया विप्रा अजायतः।** अर्थात पहाडों की गुफाओं के निकट जाकर प्राचीन काल में लोग सत्संग वश व शंका का समाधान किया करते थे। अब वहाँ न तो तपस्वी सन्यासी है और न धर्म चर्चा के लिए जाने वाले तीर्थ यात्री। आर्य समाज सत्य बोलना, विद्या, पढ़ना, बह्मचर्य के पालन आदि उत्तम कर्मों को सच्चा तीर्थ मानता है और इनको कोई बुद्धिमान व्यक्ति इंकार भी नहीं कर सकता।

180 महात्मा गांधी रोड़
(दो तल्ला) कोलकाता. 700007 फोन
9830135794, 22183825

☞ पृष्ठ 03 का शेष

एक ही रास्ता

सहारा देकर चलते थे, एक इधर एक उधर। इस जगह मुझे सहारा कौन देता? वहाँ तो एक आदमी के पाँव रखने की जगह भी न थी। मैंने सोचा– 'अब बचूँगा नहीं।' बैग से एक कागज निकाला, उस पर लिखा– ''मेरी सारी सम्पत्ति वही है जो इस बैग और बिस्तर में है। यदि मैं मर जाऊँ तो मेरा यह स्वीकार पत्र है कि बैग और बिस्तरे का सामान कुली लोग आपस में बाँट लें और दिल्ली में श्री धुरेन्द्र शास्त्री को और 'मिलाप' वालों को सूचना दे दें कि आनन्द स्वामी मर गया है।''

यह स्वीकार–पत्र लिखकर मैं प्रार्थना करने के लिए बैठा और अकेला चल पड़ा, बिना सहारे के। देखने वाले चकित हुए, मैं भी चकित हुआ। दो फर्लांग का वह रास्ता बिना सहारे के मैंने इस प्रकार पार कर लिया जैसे वह एक पग रास्ता हो। कौन उस समय मेरे साथ था? साथी चले गए। रुपया लेने वाले मजदूर चले गए। तरस खाने वाले कुली भी साथ नहीं दे सकते थे। पाँव चलता नहीं था। फिर किसने उस लम्बे और तंग रास्ते पर मेरी रक्षा की, जिसके दोनों ओर गहरी खाइयाँ थीं?

सुनो! सुनो! ऐ दुनियावालो! ऐ भगवान् को न मानने वालो! उसके अतिरिक्त और कोई सहायता नहीं करता। वह प्रत्येक स्थान पर सहायता करता है। जब सब लोग छोड़ जाते हैं, तब वही आकर सहायता देता है। जो उस पर विश्वास करता है उसका बेड़ा पार अवश्य होता है।

परन्तु मैं तो ओ३म् की बात कहना चाहता था आपसे। अब समय हो गया है, इसलिए बात फिर कहूँगा।

ओ३म् तत् सत्!

शेष अगले अंक में....

thearyasamaj.org

उत्कृष्ट शङ्का समाधान

● स्वामी विवेकानन्द परिव्राजक

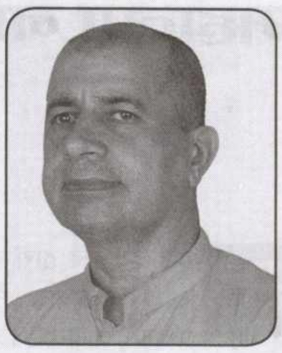

शंका–''सति मूले तद्विपाको जात्यायुर्भोगा।'' (योग. 2/13 इस सूत्र में आए भोग के विषय में जानना चाहता हूँ?

समाधान योग दर्शन के इस सूत्र में आए जाति, आयु और भोग के बारे में थोड़ा सा संक्षिप्त वर्णन देता हूँ:–

(1)जाति का मतलब है– शरीर ! मुष्य का शरीर, गाय का शरीर, घोड़े, कुत्ते, बिल्ली, हाथी, बंदर, मच्छर, मक्खी, सुअर आदि किसी का भी शरीर, यह है जाति।

* जाति एक बार जन्म से मिल गई, तो मृत्युपर्यंत वो बीच में नहीं बदलती। जाति तो निश्चित है। भगवान ने हमारे कर्मानुसार हमको जन्म से जो जाति दे दी, वो जीवन भर रहेगी।

आर्योद्देश्यरत्नमाला' में स्वामी दयानंद जी ने जाति की परिभाषा लिखी है। जो जन्म से मरणपर्यंत बदलती नहीं, उसको जाति कहते हैं। मनुष्य का शरीर मिला, तो पूरे जीवन भर जीते जी मनुष्य ही रहेंगे, बीच में उसको तोड़–मरोड़कर कुत्ता, बिल्ली नहीं बना सकते हैं।

* अगले जन्म में जाति (शरीर) बदल सकती है। बीच में जाति नहीं बदलेगी। आयु और भोग अवश्य बदल सकते हैं।

(1) आयु का मतलब –जीने का समय, जीने का काल।

* कर्मानुसार ईश्वर आयु देता है। पहले लोग अच्छे काम करते थे, खन–पान ठीक था, व्यायाम भी ठीक था, ब्रह्मचर्य का पालन भी करते थे, दिनचर्या का पालन भी करते थे आदि आदि। लोग आयु बढ़ाने वाले कर्मों का आचरण करते थे तो भगवान सौ वर्ष की आयु देकर भेजता था। अब वो सब कुछ बदल गया। खान–पान बिगड़ गया, जलवायु बिगड़ गई, दिनचर्या बिगड़ गई, ब्रह्मचर्य का पालन भी नहीं रहा और भी कई चीजें बिगड़ गईं। इसलिए भगवान अब सौ वर्ष की आयु देकर नहीं भेजता।

भगवान किसी–किसी को सौ वर्ष की आयु देता है। जिसके जैसे कर्म होते हैं, उसको वैसी आयु देता है, कम भी देकर भेजता है। जैसा शरीर होगा, उसी अनुसार आयु मिलेगी। मनुष्य शरीर मिला, तो मनुष्य शरीर में जितनी क्षमता है, उतनी आयु मिल जाएगी।

* आयु भी हर एक व्यक्ति की अलग–अलग है। किसी का शरीर मजबूत है, तो वो अस्सी साल तक जिएगा। किसी का शरीर कमजोर है, वो सत्तर साल जिएगा। किसी का और कमजोर है, तो उसका साठ में ही शांतिपाठ हो जाएगा।

* एक जो जन्म से आयु प्राप्त हुई। जन्म से जैसा, जितना बलवान शरीर मिला। यह तो है, पिछले जन्म के कर्मों का फल। मान लीजिए, किसी व्यक्ति को जन्म से ऐसा शरीर मिला कि यदि कोई दुर्घटना न होए, और ठीक–ठाक सामान्य रूप से जीता रहे, तो उसमें इतनी ताकत है कि वह सत्तर साल तक जी सकता है। तो यह आयु तो पिछले कर्मों से उसको मिली।

* भगवान जितनी आयु देकर भेजता है, उसकी भी गारंटी नहीं है कि व्यक्ति उतने दिन जी ही लेगा। व्यक्ति तब जी सकता है जबकि वह दुर्घटनाओं से बचता रहें। एक्सीडेंट होता है, मर जाते हैं। पैदा होते ही मरते हैं, दो साल के भी मरते हैं। उनकी सुरक्षा–देखभाल ठीक से नहीं हो पायी। इंफेक्शन हो गया, मर गए।

* कोई अच्छी तरह व्यायाम करके शरीर को बलवान बना लेगा, तो आयु बढ भी सकती है। अब अगर वह नया व्यायाम करके, पुरुषार्थ करके, ब्रह्मचर्य का पालन करके, ठीक खान–पान रखकर के, रोगों से बचता रहा, दुर्घटनाओं से बचता रहा, तो उसकी आयु दस–बीस वर्ष और बढ सकती है। सत्तर की थी, लेकिन वो नब्बे तक जी लिया। जो बीस वर्ष आयु बढ गई, यह इस जीवन के नए कर्मों का फल है।

* इसी प्रकार से नए कर्मों से आयु को घटाया भी जा सकता है। कोई शराब पीने लगा, मांस, अंडे खाने लगा, नशा करने लगा तो सत्तर से पचास में ही पूरा हो जाएगा। और अगर दुर्घटना हो गई, तो कभी भी मर सकता है।

एक की भूल के कारण दूसरे को नुकसान होता है। हम सड़क पर ठीक–ठाक चलते हैं। पीछे से ट्रक, कार वाला आकर के हमको ठोंकता है। उसकी गलती से हमको नुकसान होता है। ऐसे ही डॉक्टर की भूल से, नर्स की भूल से, माँ–बाप की भूल से, बच्चे को नुकसान हो सकता है। उसकी मृत्यु हो सकती है, हाथ–पाँव, टेड़े–मेड़े हो सकते हैं, कुछ भी हो सकता है। विमान दुर्घटना में मारा गया, कुएँ में कूद गया, उसने बिजली का तार पकड़ लिया, जहर पी लिया, कहीं ट्रेन की दुर्घटना में मारा गया, कुछ भी हो सकता है। दुर्घटनाओं के कारण आयु कभी भी नष्ट हो सकती है। और यदि दुर्घनाएं नहीं हुई, तो अपने नये कर्मों से आयु को घटाया–बढाया जा सकता है। यह हो गई आयु की बात।

(3) अब तीसरी बात है– भोग। भोग का अर्थ होता है–'सेवन करने योग्य पदार्थ', सुख–दुःख के भोगने के साधन। जैसे धन–सम्पत्ति, मकान, मोटर–गाड़ी, अन्न, वस्त्र, सोना–चाँदी, फ्रिज, टी.वी, रेडियो इत्यादि। ये जितने सुख–दुःख भोगने के साधन हैं, इनका नाम है– भोग।

* भोग भी इसी प्रकार से घटाया–बढ़ाया जा सकता है। मान लीजिए, एक व्यक्ति के पिछले कर्म बहुत अच्छे नहीं थे, इसलिए जन्म से उसको सामान्य गरीब परिवार में जन्म मिला। पाँच साल की उम्र तक जो घर की सामान्य सुविधाएँ थी, उतनी ही मिलीं। पाँच साल की उम्र में वह व्यक्ति स्कूल में पढ़ने के लिए गया। पढ़–लिखकर उसने खूब पुरुषार्थ किया। बुद्धिमान हो गया, एम.ए., पी एच.डी हो गया। आगे चलकर उसको नौकरी भी मिल गयी। उसको अच्छा वेतन मिलने लगा। उसने खूब धन कमा लिया। धीर–धीरे उसने अपना मकान भी अच्छा बना लिया। फिर धीरे–धीरे और अच्छा कमाकर के मोटरकार भी खरीद ली। ऐसे उसने भोग के साधन बढ़ा लिए।

* गरीब आदमी मेहनत करके नए पुरूषार्थ से भोग के साधन बढ़ा सकता है। उसमें वृद्धि और परिवर्तन कर सकता है।

* इसके विपरीत भी हो सकता है। किसी बच्चे के पिछले जन्म के कर्म अच्छे थे। उसको सेठ के घर जन्म मिला। जन्म से उसको खाने–पीने, भोगने की बढ़िया सुविधाएँ मिलीं। लेकिन आगे जब वह विद्यार्थी बनकर स्कूल में पढ़ने गया, तब उसने मेहनत नहीं की, पुरूषार्थ नहीं किया, बुद्धि का विकास नहीं किया। जो जन्म से प्राप्त घर की संपत्ति थी, वो भी शराब पीने में, इधर–उधर यार–दोस्तों के साथ घूमने–फिरने में, मौज मस्ती में नष्ट कर दी।

बुद्धि का विकास किया नहीं, तो वे धीरे–धीरे नीचे आ जाएगा। जो संपत्ति पास में थी, उसे भी खो बैठा।

इस प्रकार से ''सुख–दुःख को भोगने के साधन'', भोग कहलाते हैं। वो घटाए जा सकते हैं, बढाए जा सकते हैं। इन साधनों को कोई छीन के भी ले जा सकता है, और कभी–कभी कोई दे भी सकता है।

दर्शनयोग महाविद्यालय
रोजड़वन, गुजरात

भगवद्गीता का एक धार्मिक श्लोक

● डॉ. भवानीलाल भारतीय

गीता को हमारे रचनाकारों एवं विद्वानों ने उपनिषदों का सार कहा है। यह संवाद शैली में रचा गया है, जहाँ कृष्ण वक्ता एवं अर्जुन श्रोता या उपदेश ग्रहण करने वाला हैं। ग्यारहवें अध्याय को विश्वरूप दर्शन (आलंकारिक) कहा जाता है। यहाँ आते–आते अर्जुन को विश्वास हो गया, यों तो कृष्ण एक सामान्य मनुष्य हैं किंतु इस प्रसंग में व्याख्यात उनके सांख्य, योग, वेदान्त आदि के ज्ञान से यह पता चलता है कि वे साधारण मनुष्य नहीं किंतु मानवजाति के शास्ता तथा जगद्गुरु हैं इस प्रसंग में अर्जुन ने निम्नलिखित श्लोक कहा–

सरवेति मत्वा प्रसभं यदुक्तं हे कृष्ण हे यादव हे सखेति।
अजानता महिमानं तवेदं मया प्रमादात् प्रणयेन वाऽपि।

मैंने आपको अपना सखा मानकर कभी हे कृष्ण, हे यादव, हे सखा आदि शब्दों से सम्बोधित किया है। वस्तुतः आप एक सखा या यदुवंशी कृष्ण से भी बढ़कर हैं। सामान्य मानव से चिंतन, मनन, साधन में कहीं बढ़कर है। अतः यदि मैंने आपको पुकारते समय कृष्ण, यदुवंशी यादव या हे मित्र, जैसे सम्बोधनों से सम्बोधित किया तो यह आपकी महिमा को न समझते हुए, पारस्परिक प्रेम के कारण या प्रमाद वश (असावधानी) हुआ।

कृष्ण और अर्जुन के परस्पर सम्बंध है। पारिवारिक दृष्टि से वह कृष्ण के बहनोई हैं। कृष्ण की बहिन सुभद्रा से अर्जुन ने विवाह किया था। दोनों में परस्पर मैत्री भाव तो था ही, दोनों का परस्पर वार्तालाप दो अनन्य मित्रों की भाँति था। इसलिए अर्जुन कृष्ण को नाम लेकर कभी कृष्ण तो कभी उनके यदुवंशी होने के कारण यादव तथा कभी मात्र सखा कहकर पुकारता था। जैसे दो प्रगाढ़ मित्रों के बीच सहज स्नेह सम्बंध होने के कारण वे आपस में स्वेच्छता बरतते हैं।

परंतु आज गीता का गूढ़ और योग, वेदान्त, सांख्य आदि दर्शनों पर आधारित व्यावहारिक दर्शन कृष्ण से सुनकर अर्जुन को विश्वास हुआ कि वे प्रथम श्रेणी के दार्शनिक, कार्यमार्गी योगी तथा वैश्विक स्तर के उपदेशक हैं। अतः उसने एक प्रकार से क्षमा याचना करते हुए कहा कि मैंने जो आपको एक साधारण बंधु, मित्र तथा सखा की भाँति ट्रीट किया, उसके दो ही कारण हैं–या तो यह मेरा प्रमाद (गफलत) है या आपसे अतिशय प्रेम है। अन्यथा आप तो एक महान् योगी और शास्ता (उपदेशक) की भाँति वंदनीय हैं।

–3/5 शंकर कालोनी
श्रीगंगानगर

thearyasamaj.org

महात्मा नारायण स्वामी का आदर्श जीवन सब मनुष्यों के लिए प्रेरणाप्रद एवं अनुकरणीय

● मनमोहन कुमार आर्य

महर्षि दयानन्द द्वारा प्रस्तुत आर्य विचारधारा में वह प्रभाव व शक्ति है जिसका अनुकरण व अनुसरण करने पर एक सामान्य व्यक्ति दूसरों के लिए आदर्श प्रस्तुत कर देश, धर्म एवं समाज की सर्वोत्तम सेवा करने के साथ उनका प्रेरणास्रोत बनकर स्वयं के जीवन को धन्य बना सकता है। यह शब्द महात्मा नारायण स्वामी के जीवन में पूर्णतया चरितार्थ हुए देखे जा सकते हैं।

संन्यास ग्रहण करने से पूर्व महात्मा नारायण स्वामी जी नारायण प्रसाद के नाम से जाने जाते थे। उनका जन्म विक्रमी संवत् 1922 व ईस्वी सन् 1865 की वसन्त पंचमी को अलीगढ़ में मुंशी सूर्य प्रसाद जी के यहाँ हुआ था। उनकी प्रारम्भिक शिक्षा एक मौलवी के पास हुई जिसने उन्हें उर्दू व फारसी का अध्ययन कराया। वह उर्दू के अच्छे कवि बन गए। मासिक उर्दू पत्रों में उनकी कविताएँ प्रकाशित होती रहती थी। उन्होंने अंग्रेजी भाषा का भी अध्ययन किया। 14 वर्ष की अवस्था होने पर उनके पिता का देहान्त हो गया।

बालक नारायण प्रसाद ने अलीगढ़ में आर्य समाज के संस्थापक स्वामी दयानन्द सरस्वती के दर्शन किए थे। यह घटना सम्भवतः स्वामी दयानन्द जी के अलीगढ़ के 22 से 25 अगस्त, 1878 के अल्पकालीन प्रवास के मध्य घटी। महात्मा जी के ही शब्दों में घटना प्रस्तुत है। वह लिखते है – ''एक दिन (जब मैं एक अंग्रेजी स्कूल में पढ़ता था) स्कूल में चर्चा हई कि आज एक बड़े सुधारक स्वामी दयानन्द सरस्वती आने वाले हैं। उत्सुकता से बहुत से विद्यार्थी और अध्यापक देखने के लिए स्कूल से बाहर उस रास्ते में जहाँ से वे गुजरने वाले थे, खड़े हो गए। थोड़ी ही देर में देखा कि एक जोड़ी (बग्घी) में स्वामी जी सवार होकर हम सबके सामने से जा रहे थे। उनके दिव्य एवं चमकते हुए चेहरे को देखने मात्र. से ही ऐसा कोई न था, जो प्रभावित न हुआ हो।''

आर्य समाज में प्रविष्ट होने से पूर्व महात्मा जी शैवमत के अनुयायी थे। वे वर्ष में दो बार व्रत रखते थे। आर्य समाज के विषय में उनकी धारणा थी कि ये हिन्दू समाज में प्रचलित मूर्तिपजा, अवतारवाद एवं फलित–ज्योतिष आदि का खण्डन ही करते है। आर्य समाज, मुरादाबाद के सभासद महाशय हर सराय सिंह के सम्पर्क में आकर और उनसे आर्यसमाज के नियम जानकर उनका भ्रम दूर हुआ। उन्होंने महर्षि दयानन्द प्रणीत विश्व की कालजयी रचना ''सत्यार्थ प्रकाश'' को पढ़ा जिसने उनकी आँखे खोल दीं और वे आर्यसमाज के महत्व को समझ सके। स्वाध्याय ने उन्हें यज्ञोपवीत धारण करने की प्रेरणा दी। रामगंगा के तट पर उन्होंने यज्ञोपवीत धारण कर यज्ञ के पश्चात् जीवन में कुछ व्रत धारण करने की घोषणा की जिसके अन्तर्गत नित्य प्रति सन्ध्या हवन करना, ईमानदारी एवं परिश्रम से जीविका प्राप्त करना, सद्गृहस्थ की तरह जीवन व्यतीत करना तथा संस्कृत एवं अंग्रेजी की शिक्षा प्राप्ति के पूर्ण प्रयत्न सम्मिलित थे। एक वर्ष बाद व्रतपालन में पूर्ण सफलता मिलने पर उन्होंने आर्यसमाज मुरादाबाद की सदस्यता ग्रहण की। सन् 1891 में साहू श्यामसुन्दर द्वारा प्रदत्त भूमि, धन एवं अन्यों से संग्रहीत धन से मुरादाबाद में आर्यसमाज मन्दिर का भवन तैयार हो गया। वे समाज के उपमंत्री बनाये गये थे। समाज के वार्षिकोत्सवों में भोजन के प्रबन्ध के कार्य का उत्तरदायित्त्व उन पर था जिससे वेह तत्कालीन प्रमुख आर्य वैदिक विद्वानों एवं नेताओं के निकट सम्पर्क में आए। इन प्रमुख विद्वानों में पं. तुलसीराम स्वामी, पं. लेखराम, लाला मुंशीराम, पं. आर्य मुनि, पं. घनश्याम शर्मा मिर्जापुरी एवं अन्य अनेक मनीषी थे।

महात्मा नारायण स्वामी जी सन् 1919 तक कई वर्षो तक प्रांतीय सभा की अंतरंग के सदस्य रहे और सभा के कार्यो में सक्रिय भाग लेते रहे। आर्यसमाज के विद्वान के लिए संस्कृत, हिन्दी एवं अंग्रेजी का ज्ञान अपरिहार्य है। हिन्दी ज्ञान तो आपको था ही, अतः संस्कृत का अध्ययन आपने पं. कल्याण दत्त राजवैद्य से किया। अंग्रेजी अध्ययन में उन्होंने बाबू हरि दास जी अधिवक्ता से भरपूर सहायता ली।

महात्मा नारायण स्वामी ने रामगढ़ तल्ला, जनपद नैनीताल में अपने निवास के लिए 20 मई सन् 1920 को एक कुटिया का निर्माण आरम्भ किया था जो ''नारायण आश्रम'' के नाम से जाना गया। 8 दिसम्बर सन् 1920 को महात्मा जी ने इस आश्रम में प्रवेश किया। निर्माण अवधि में वह ठाकुर कृष्ण सिंह जी की वाटिका में रहे और वहाँ अपने अस्थायी निवास को उन्होंने पाठशाला का रूप दिया। हम यहाँ भी यह बताना चाहते हैं कि महात्मा जी उच्च कोटि के साधक थे और योगदर्शन निर्दिष्ट साधना पद्धति का वे अपने जीवन में पूरी तरह से पालन करते थे। उनकी साधना की स्थिति को उनके जीवन में घटित इस घटना से जाना जा सकता है जिसके अनुसार उन्होंने अपेण्डिक्स रोग के जान लेवा ऑपरेशन में बिना पूर्ण बेहोश हुए ऑपरेशन करवाकर डाक्टरों को आश्चर्य में डाल दिया था। नारायण आश्रम, रामगढ़ में जाने पर हमें वहाँ बताया गया था यहाँ महात्माजी ने न केवल उपनिषदों का भाष्य आदि साहित्यक कार्य ही किये अपितु साधना में ही वे अपना अधिकांश समय व्यतीत करते थे। आर्य समाज में उन जैसे उच्च कोटि के साधक कम ही हुए हैं।

संस्था गुरुकुल वृन्दावन ने देश को उच्च कोटि के अनेक विद्वान, साहित्यकार व देशभक्त दिए हैं। सन् 1919 में गुरूकुल को फर्रूखाबाद से मथुरा के निकट पौराणिकों के गढ़ वृन्दावन लाया गया था। अतः पोपों की इस नगरी में वेद–शास्त्र ज्ञान से शून्य अंहकारी ब्राह्मणों ने इसके विरोघ के साथ यहाँ के ब्रह्मचारियों एवं शिक्षकों के साथ असभ्यता एवं पशुता के व्यवहार किए। इस स्थिति में महात्मा नारायण स्वामी जी के धैर्य, गुरूकुल के ब्रह्मचारियों एवं कुलवासियों की प्रतिक्रिया में प्रेम एवं सौहार्दपूर्ण व्यवहार ने गुरूकुल के सामान्य क्रिया–कलापों में स्थानीय पौराणिक बन्धुओं द्वारा उपस्थित की जाने वाली समस्याओं पर नियंत्रण पा लिया गया। महात्मा नारायण स्वामी इस गुरूकुल के सर्वाधिकारी बनाए गए थे। उनके एवं ब्रह्मचारियों के सहयोगात्मक व्यवहार ने जिलाधिकारी मि. डैम्पीयर को गुरूकुल का प्रशंसक बना दिया। यह भी एक तथ्य है कि गुरूकुल वृन्दावन की स्थापना प्रसिद्ध क्रान्तिकारी राजा महेन्द्र प्रताप से दान में प्राप्त भूमि पर की गई थी। गाँधी जी का भी यहाँ पदार्पण हुआ था और अपने इस गुरूकुल के प्रवास को उन्होंने महत्वपूर्ण एवं सुखद कहा था। गुरूकुल के संबंध में यह भी महत्वपूर्ण तथ्य है कि उसके भवनों का शिलान्यास गवर्नर जेम्स मैस्टन ने किया था। इसके बाद महात्मा जी ने आजीवन अपनी जमा पूंजी रूपये 2,000 के मासिक ब्याज रूपये 13 से जीवनयापन किया। गुरुकुल वृन्दावन में वह जो भोजन किया करते थे, उसके मासिक भुगतान हेतु 10 रुपये देते थे और शेष 2 रुपयों में वस्त्र, यात्राएँ आदि करते थे। त्याग का यह उदाहरण ही इस गुरूकुल की उन्नति का सबसे बड़ा कारण था।

स्वामी श्रद्धानन्द जी के 23 दिसम्बर सन् 1926 को एक धर्मान्ध अब्दुल रशीद द्वारा हत्या किए जाने के पश्चात् देश भर में आर्यसमाजों के नगर कीर्तनों और उत्सवों में विघ्न पैदा किए जाने लगे। आर्यसमाजियों की हत्याएँ भी सामान्य हो गई तो दिल्ली में महात्मा हंसराज जी की अध्यक्षता में प्रथम आर्य महासम्मेलन हुआ। इस सम्मेलन में महात्मा नारायण स्वामी ने प्रस्ताव किया कि आर्यसमाज के विरुद्ध जारी हिंसा एवं नगर कीर्तनों आदि में बाधाओं के विरोध में सत्याग्रह किया जाए जिसके लिए 10,000 आर्यवीर भर्ती किए जाएँ एवं 50,000 रूपए एकत्र किए जाएँ। इस प्रस्ताव के अनुसार 10,000 आर्यवीरों की भर्ती एवं धनसंग्रह का उत्तरदायित्व अपने ऊपर लेकर महात्मा जी ने अपूर्व साहस एवं दूरदर्शिता का परिचय दिया। कुछ समय पश्चात् 10,600 आर्यवीर धर्मरक्षक भर्ती किए गए। इसका श्रेय महात्मा जी के साथ प्रो. रामदेव, स्वामी ब्रह्मानन्द (भैंसवाल) एवं आचार्य परमानन्द (झज्जर) आदि को भी है जिन्होंने महात्माजी को सक्रिय सहयोग दिया। इसी बीच गुरूकुल कांगड़ी के वार्षिकोत्सव के अवसर पर आयोजित आर्य सम्मेलन का महात्माजी को सभापति बनाया गया था।

गुरूकुल वृन्दावन में वे एक छप्पर की कुटिया में रहते थे। महात्मा नारायण स्वामी जी ने मुरादाबाद की राजकीय सेवा में जिन पदों पर कार्य किया वहाँ हजारों रुपए कमाए जा सकते थे। वित्तैषणा शून्य महात्माजी ने जीवन भर कभी एक पैसा भी घूस न लेकर एक आदर्श प्रस्तुत किया। कलेक्टर पी. हरीसन, जिसके अधीन उन्होंने कार्य किया था उन्होंने लिखा है कि महात्मा नारायण स्वामी की ईमानदारी में निष्ठा उल्लेखनीय थी। आगे चलकर इन पी. हरिसन ने प्रयाग में एक अंग्रेज भक्त बाबा आलाराम द्वारा आर्यसमाज एवं सत्यार्थ प्रकाश के विरूद्ध स्थापित अभियोग में उनकी जमकर खिंचाई की थी। इसका कारण महात्मा नारायण स्वामी जी के व्यक्तित्त्व का उन पर प्रभाव था।

फरवरी, 1925 में आर्यसमाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द सरस्वती की जन्म शताब्दी मथुरा में अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर मनाने का निर्णय लिया गया था। गुरूकुल शिक्षा प्रणाली के पुरस्कर्ता, स्वतन्त्रता आन्दोलन के लोकप्रिय नेता एवं शुद्धि आन्दोलन के प्रमुख सूत्रधार स्वामी श्रद्धानन्द सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा एवं शताब्दी सभा के प्रधान थे। आर्य समाज में पार्टीबाजी के कारण सहयोग न मिलने

शेष पृष्ठ 08 पर ☞

thearyasamaj.org

जीवात्मा सत् स्वच्छ चित्त वाला है

● हरिश्चन्द्र वर्मा 'वैदिक'

मस्तिष्क शास्त्र (PHRENOLGY) का जन्म दाता गॉल लिखता है कि मेरी राय में एक ही निरवयव वस्तु है– जो देखती, सुनती, स्पर्श करती और प्रेम, विचार तथा स्मरण आदि करती है, पर यह अपने कार्य के लिए मस्तिष्क में अनेक भौतिक–साधन चाहती है। इसने वही बात कह दी जो प्रश्नोपनिषद् के ऋषि ने कही है:–

एष हि द्रष्टा–स्प्रष्ट श्रोता घ्राता रसयिता मन्ता बोद्धा कर्त्ता विज्ञानात्मा पुरूषः।

निश्चय ही यह देखने वाला, स्पर्श करने वाला, सुनने वाला, चखने वाला, मनन करने वाला, जानने वाला, कर्म करने वाला, ज्ञान करने वाला आत्मा है।

'ऋषि दयानन्द' सत्यार्थ प्रकाश के नवम समु0 में लिखते हैं कि – 'जो कोई ऐसा कहे कि जीव अर्थात आत्मा कर्त्ता, भोक्ता नहीं तो उसको जानो कि वह अज्ञानी, अविवेकी है क्योंकि बिना आत्मा के ये सब (इन्द्रिय उपकरण) जड़ पदार्थ हैं, उनको सुख–दु:ख का भोग व पाप–पुण्य का कर्तव्य कभी नहीं हो सकता। हाँ इनके (मन, बुद्धि इन्द्रियादि के) सम्बन्ध से, आत्मा पाप–पुण्यों का कर्त्ता और सुख–दु:खों का भोक्ता है।'

स्वामी अखिलानन्द सरस्वती जी लिखते हैं कि सृष्टि में मनुष्य का आना, मनुष्य के अच्छे और बुरे कर्मों के कारण हुआ है। यदि उसके अच्छे कर्म अधिक है तो मनुष्य बन गया है। यदि बुरे कर्म अधिक है तो पशु–पक्षी तो जाता है। अच्छे–बुरे कर्मों का भोग सुख और दु:ख रूप में प्रभु की व्यवस्था से मिलता है और यह भी निर्विवाद सत्य है कि मनुष्य प्रत्येक विपाक की अर्थात् सुख–दु:ख रूपी कर्मफल की किन्हीं साधनों द्वारा प्राप्त करता है। किसी प्राणी को यदि कर्म का विपाक प्राप्त होता है तो उसे सबसे पहले उस विपाक को प्राप्त करने के लिए शरीर रूपी साधन की आवश्यकता होती है।

प्राणी इस शरीर के द्वारा ही सुख और दु:ख भोग सकता है और प्राप्त कर सकता है। कोई सुख और दु:ख इस संसार में किसी भी प्राणी को बिना किसी साधनों के प्राप्त हो, यह असंभव है। मनुष्य को तीन साधनों से सुख–दु:ख प्राप्त होते हैं। आध्यात्मिक, आधिभौतिक, आधिदैविक। इन तीनों प्रकार के सुखों और दु:खों को प्राप्त करने और भोगने के लिए मनुष्य के पास ज्ञानेन्द्रियाँ और कर्मेन्द्रियाँ, मन और बुद्धि अपने कर्मों के विपाक प्राप्त करने, भविष्य के लिए कर्म करने और पूर्वजन्म के कर्मों के फल भोगने के लिए साधन रूप दिए हैं।

लेख का शीर्षक है– 'जीवात्मा सत्=स्वच्छ चित्तवाला है 'जैसे सफेद शीशे का गिलास आत्मा का सूक्ष्म शरीर है और उसमें जो स्वच्छ जल है वह आत्मा के समान है। जब कर्म का सूक्ष्म फल संस्कार का रंग जिस प्रकार के गिलास पर पड़ता है तो वह जल रूपी आत्मा उसी प्रकार का दिखता है। सूक्ष्म शरीर का गठन (मुख्य प्राण से) पांच प्राण, पांच सूक्ष्म भूत (से) पांच ज्ञानेन्द्रियाँ, मन तथा बुद्धि गुणों से युक्त सतरह तत्वों के समुदाय को परमात्मा ने आत्मा के लिए इसलिए किया है ताकि उनमें स्थूल शरीर बने और उन्हीं के माध्यम से आत्मा अपने संस्कार स्वभाव के अनुसार कर्मों को करे और उसी के अनुसार सुख–दु:खों के भोग का बोध करे। अतः मानव का कर्म ही प्रधान है, जो जैसा करता है उसका सूक्ष्म फल संस्कार रूप में आत्मा के सूक्ष्म शरीर (के अन्तर्गत जो मन और बुद्धि है उस) पर पड़ता रहता है।

तात्पर्य यह कि सारे स्त्री–पुरूष के स्वभाव, मनोवृत्ति, विचार और अँगूठे के चिह्न एक जैसे नहीं होते, किन्तु उन सबकी आत्मा अर्थात जीवन शक्ति एक ही प्रकार की है, केवल कर्मानुसार सूक्ष्म शरीर पर संस्कार के पड़ने से आत्मा विभिन्न स्वभावों वाला दिखता है।

यदि कोई अधिक हिंसक स्वभाव वाला बन गया है, बलात्कारी और भ्रूण हत्याकारी है, तो वह स्वयं किसी हिंसक योनि में चला जाता है। जैसे शराबी, शराबी के पास जाना पसन्द करता है, वैसा ही योनि का विषय है। कर्म समाप्त हो जाता है किन्तु उसकी वासना रूपी संस्कार शेष रह जाता है। यह जीवात्मा का चित्त अर्थात सूक्ष्म शरीर अनगिनत वासनाओं से चित्रित है।

प्रश्नोपनिषद में इन विषयों पर बहुत सुन्दर प्रकाश डाला गया है– 'प्राण के सम्बन्ध में कैशल्य ने 6 प्रश्न किये थे जिनमें एक प्रश्न तो यह था कि 1– प्राण कहाँ से उत्पन्न होता है? और 2– इस शरीर में कैसे आता है? मंत्र निम्न प्रकार है:–

आत्मनः एष प्राणो जायते। यथैषा पुरूषे छायैतस्मिन्नेत दाततं मनोधिकृते नाऽऽ यात्यस्मिन् शरीरे।।

व्याख्या प्राण सूक्ष्म शरीर का एक अंग है। सूक्ष्म शरीर के साथ आत्मा स्थूल शरीर में प्रविष्ट हुआ करता है। इसीलिये इस स्थूल शरीर में प्राण की उत्पत्ति का निमित्त आत्मा को बतलाया गया है। प्राण शरीर के देश विशेष में नहीं रहता किन्तु सारे शरीर में छायावत फैला रहता है। ''मनोधिकृत'' नाम वासना का है– कर्म से वासना की उत्पत्ति होती है, यह वासना ही जन्म का कारण हुआ करती है। यह वासना उत्पन्न उन्हीं कर्मों से होती है जो फल की इच्छा से (सकाम) किये जाते हैं। इसी वासना से जीव, सूक्ष्म शरीर के साथ स्थूल शरीर को जन्म के द्वारा प्राप्त किया करता है।

प्रश्नोपनिषद के अनुसार–गर्भ से गर्भ की स्थापना का कारण प्राण है, यदि रज और वीर्य के साथ आत्मा के सूक्ष्म शरीर का प्राण न मिले तो गर्भ की स्थापना नहीं हो सकती अतः उसी से गर्भ (में शिशु) की वृद्धि होती है।

जीवात्मा, क्या है– प्रिंसिपल दीवानचन्द जी 'एम.ए.' के शब्दों, में– आत्मा मिश्रित पदार्थ नहीं, इसलिए इसके विच्छेद का प्रश्न ही नहीं उठता। आत्मा अमिश्रित द्रव्य है, इसलिए अमर है।' कठोपनिषद के चौथे मंत्र में लिखा है:– ''आत्मन्द्रियमनोयुक्त भोक्तेत्माहुर्मनीषिणः।। 4।। अर्थात् कर्मों का कर्त्ता और भोक्ता कौन है? इसका बड़ा उत्तम निर्णय किया है। उपनिषद ने स्थिर किया है कि आत्मा, मन और इन्द्रियाँ में तीनों ही मिलकर कर्त्ता और भोक्ता है।''

महात्मा आनन्द स्वामी के शब्दों में– ''यह जीव 'सत् चित' जगत के भोग भोगने और दु:खों की अत्यन्त निवृत्ति करके मोक्ष प्राप्त करने के लिए मानव शरीर के साथ इसका सम्बन्ध होता है।''

जीवात्मा वह अणुशक्ति है, जिसमें ज्ञान करने, कर्म करने और भोग करने का गुण बीज रूप में विद्यमान रहता है। स्त्री के अन्दर गर्भाशय की क्रिया–मासिक धर्म के पश्चात उसमें अण्डे उत्पन्न होकर 28 दिन रहने और पलने के पश्चात एक नाली से होकर गर्भाशय तक चले जाते हैं, जहां कुछ दिन तक ठहरे रहते हैं। स्त्री में ये अंडे ऐसी छोटी–छोटी आकृति के होते हैं कि यदि 280 अंडे मिलाकर रखे जायें तो लगभग एक इंच लम्बा स्थान घेरता है। साधारण तथा प्रतिमास अंडा गर्भाशय में मासिक धर्म के दिनों आता है, यदि यहां कुछ दिनों में तब पुरूष के शरीर से, स्त्री के शरीर में वीर्य प्रवेश कर जाता है तब उसमें लाखों वीर्याणु क्रियाशील हो जाते हैं, जिनमें केवल प्राण की क्रिया होती है और उनमें से जिनका सूक्ष्म शरीर से सम्बन्ध हो जाता है, वही भाग्यशाली गर्भ के रज अण्डेदानी में प्रवेश कर पाता है, और गर्भ ठहर जाता है (शेष वीर्याणु नष्ट हो जाते हैं) उसके पश्चात उस सूक्ष्म भ्रूण में सूक्ष्म शरीर के प्राण द्वारा उसमें गति और माता से रस रक्तादि को नाभि से कमल नल द्वारा प्राप्त कर उससे उसका सर्वांगीण बनने की क्रिया आरम्भ हो जाती है। जब ईश्वरीय नियम द्वारा आत्मा से युक्त सूक्ष्म शरीर के प्राणादि द्वारा शिशु का नौ मास में सारे अंग पुष्ट हो जाते हैं, तब ठीक निर्धारित समय में उसी के नियम द्वारा गर्भ से बाहर शिशु का जन्म हो जाता है।

हम लोगों के शरीर में परमात्मा ने जो तीन अवस्था प्रदान की है, वह जन्म और मृत्यु का एक छोटा सा उदाहरण है, यथा– सुषुप्ति अवस्था मृत्यु का। गर्भ में आना, स्वप्नावस्था और जन्म ले लेना जागृतावस्था का चिह्न है। जैसे सूर्योदय के समय उसमें लाली होती है, वैसे ही जन्म के बाद और नींद से जागने पर ज्ञानतन्तु अच्छादित रहता है। फिर धीरे–धीरे सूर्य जैसे ज्ञानोदय में तीव्रता होने लगती है। प्राण शक्ति तीन प्रकार की है– एक वह प्राण है जो पंच तत्वों में व्याप्त है। दूसरा उससे सूक्ष्म वह है जो सूक्ष्म शरीर में है और तीसरा सबसे सूक्ष्म प्राण शक्ति वह है जो ईश्वर का सामर्थ के रूप में सर्वत्र मौजूद है। (इसे आप ऊर्जा भी कह सकते हैं)

अन्तरिक्ष में अणु–परमाणुओं का आवागमन करना। अग्नि का जलना। वायु का बहना। जल का भिगोना और पृथ्वी का धारण करना। इस प्रकार उनमें भिन्न–भिन्न रूपों में भौतिक प्राण की क्रिया हो रही है। वृक्ष वनस्पतियों का हरा भरा रहना, फूलना–फलना आदि पंचतत्त्वों के माध्यम से उन सब में भी प्राण की ही क्रिया हो रही हैं। केवल शरीरधारी प्राणी ही ऐसे हैं जिनमें आत्मा के संयोग से ज्ञातृत्वगुण पाया जाता है। पुनश्च–इसी प्रकार वीर्य जब शरीर से बाहर निकल जाता है तब उसमें प्राण की क्रिया–सूक्ष्म रूप से होने लगती है (जो दृष्टिगोचर नहीं होता) और जब स्त्री के शरीर में रज के अण्ड से उसका सम्पर्क हो जाता है तो आत्मा के संयोग से गर्भ की स्थापना हो जाती है।

पुरूष के शरीर में वीर्य ओज के रूप में विद्यमान रहता है, उसे युवक लोग व्यर्थ का नष्ट न करें। काम वासना, उत्तेजना अंधा बना देता है, स्वप्न दोष न होने दें, उससे नपुसंकता का रोग हो सकता है। इसीलिए कहा गया है कि 'बचपन है जिनका सुधरा, जीवन बना उसीका'।

प्रश्न– कौन सोता है और कौन जगता है? उत्तर–आत्मा और प्राण में दोनों नहीं सोते, केवल आत्मा के सम्बन्ध से, मन और बुद्धि ही निद्रावस्था में आ जाते हैं।

शेष पृष्ठ 11 पर ☞

thearyasamaj.org

☞ पृष्ठ 06 का शेष

महात्मा नारायण स्वामी ...

की आशंका से स्वामीजी ने 1923 में दोनों पदो से त्याग पत्र दे दिया। दिसम्बर 1923 में सम्पन्न शताब्दी सभा की बैठक में महात्मा नारायण स्वामी जी को सर्वसम्मति से दोनो सभाओं का प्रधान चुना गया। जन्म शताब्दी समारोह 15 फरवरी से 21 फरवरी, 1925 तक आयोजित किया गया। इस आयोजन का महत्त्व इसी तथ्य से जाना जा सकता है कि इस आयोजन में सम्मिलित होने वाले सरकारी कर्मचारियों को भारत सरकार ने एक सप्ताह का अवकाश प्रदान किया था। प्रांतीय सरकारों एवं देशी रजवाडों ने भी इसी प्रकार की घोषणाएँ की थी। रेल विभाग ने इस आयोजन के लिए अनेक स्थानों से विशेष रेलें चलाई थी। स्थानीय लोगों ने भी समारोह के आयोजकों एवं आगंतुकों का सहयोग एवं व्यापक सहायता की। इन सब कारणों से यह आयोजन भारत के इतिहास में अपने समय का अभूतपूर्व आयोजन सिद्ध हुआ। मथुरा जंक्शन पर रेलयात्रियों से एकत्र टिकटों के अनुसार 2,54,000 यात्री इस समारोह में उपस्थित थे। अन्य साधनों से की गणना करने पर लगभग 4 लाख ऋषि दयानन्द के भक्तों ने इसमें भाग लिया था। जापान, चीन, बर्मा, अफीका, मारीशस, मेडागास्कर, वेस्टइंडीज, जावा, सुमात्रा, फिलीपाइन और अमेरिका आदि देशों के प्रतिनिधि भी इस समारोह में बड़ी संख्या में सम्मिलित हुए थे। महात्मा नारायण स्वामी जी ने इस उत्सव के विषय में स्वयं लिखा है कि स्त्रियाँ शायद इतनी स्वतन्त्रता के साथ बेखटके किसी भी मेले में नहीं घूम सकती थीं जितनी स्वतन्त्रता उन्हें इस मेले में थी। विशेषज्ञों का कहना है कि इतना बड़ा धार्मिक मेला हजारों वर्षो के बाद हुआ। न कहीं चोरी की वारदात, न ठगी। न किसी की गाँठ काटी गई न और प्रकार से किसी को ठगा गया। भोजन की व्यवस्था भी प्रशंसनीय थी जिसमें सबको पर्याप्त मात्रा में सुविधापूर्वक अति स्वादिष्ट भोजन सुलभ था। छूत–अछूत किसी प्रकार का भेदभाव न था। इतना बड़ा मेला केवल शिक्षितों का था, कोई मैला कपडा पहने हुए कहीं भी दिखाई नहीं दे सकता था।

मेले में कहीं भी सिगरेट एवं नशीले पदार्थ उपलब्ध नहीं थे। सर्वत्र रामराज्य की स्थिति थी। लाउडस्पीकर का उन दिनों प्रचलन नहीं था। अतः वक्ताओं को अपने स्थान पर मेजों पर खड़ें होकर बोलना पड़ा। 19 फरवरी को जो शोभायात्रा निकली वह भी अभूतपूर्व थी। आर्य जगत् के प्रख्यात विद्वान पं. युधिष्ठिर मीमांसक ने अपने आत्म परिचय में इस समारोह की प्रशंसा करते हुए लिखा है कि यहाँ भोजन में जो स्वाद आया वह फिर कभी नहीं प्राप्त हुआ। इस अवसर पर मथुरा नगर में अभ्यागत आर्यो का जो जुलूस निकला वह अपने आप में अभूतपूर्व था। प्रत्येक नर–नारी के हृदय में ऋषि दयानन्द के प्रति जो श्रद्धा और उल्लास इस अवसर पर दिखाई पड़ा वह अन्य किसी शताब्दी समारोह में देखने को नहीं मिला।

शताब्दी समारोह के निर्विघ्न समाप्त होने के पश्चात् आयोजन में उपस्थित आर्य जगत् की समस्त विभूतियों एवं भारत और उपनिवेशों के समस्त आर्य नर–नारियों की ओर से महात्मा नारायण स्वामी जी महाराज कार्यकर्त्ता प्रधान श्रीमद्दयानन्द जन्म शताब्दी सभा एवं प्रधान, सार्वदेशिक सभा की सेवा में 20 फरवरी 1925 को एक बैठक में अभिनन्दन पत्र भेंट किया। अभिनन्दन पत्र शाहपुराधीष राजाधिराज सर नाहर सिंह जी ने पढ़ा। आप जो वाक्य पढ़ते थे उन्हें प्रिंसिपल दीवान चन्द जी कानपुर उच्च स्वर से दुहराते थे। अभिनन्दन पत्र में कहा गया था कि जो अथक पुरूषार्थ, जो निःस्पृह तपस्या आपने इस दयानन्द महायज्ञ को पूर्ण करने के लिए की है, उससे हमारा हृदय कृतज्ञता के सच्चे भावों से गद्‌गद् हो रहा है और हमें निश्चय है कि आपकी आदर्श निःस्वार्थ सेवा, अगली पीढ़ी के लिए दृष्टान्त बनेगी और उसकी विद्युत से न जाने कितने युवक हृदय प्रभावित होंगे। आर्यसमाज का गौरव है कि उसमें आप जैसे दयानन्द के सच्चे भक्त विद्यमान हैं। उन्होंने आर्य समाज और उसके प्रवर्तक महर्षि दयानन्द के काम पर सर्वस्व न्योछावर किया है। आपका विशुद्ध उन्नत चारित्र्य, विद्वता दृढ़ अध्यवसाय, आत्म स्वाध्याय, शांति युक्त कर्मण्यता ये ऐसे गुण हैं जिन्हें हम सब अनुभव कर रहे हैं।

पराधीन भारत में स्वतन्त्र हैदराबाद रियासत में नवाब उस्मान अली द्वारा अपनी 85 प्रतिशत बहुसंख्यक आर्य हिन्दू प्रजा के प्रायः सभी धार्मिक एवं मानवीय अधिकारों के हनन के विरूद्ध आर्य समाज द्वारा लगातार सात वर्ष तक उनके समाधान का प्रयास किया गया। रियासत की साम्प्रदायिक एवं हठधर्मिता की नीति के विरोध में महात्मा नारायण स्वामजी जी के नेतृत्व में 3 जनवरी सन् 1939 से शान्तिपूर्ण सत्याग्रह आरम्भ किया गया जो 17 अगस्त 1939 को सफलता पूर्वक समाप्त हुआ। हैदराबाद रियासत के भारत में विलय के अवसर पर भारत के प्रथम गृहमंत्री सरदार पटेल ने विलय का सारा श्रेय आर्य सत्याग्रह को दिया। उन्होंने कहा कि आर्यसमाज ने यदि पहले से भूमिका तैयार न की होती तो 3 दिन में हैदराबाद में पुलिस एक्शन सफल नहीं हो सकता था। हैदराबाद में यह पुलिस कार्यवाही 15 से 17 सितम्बर, सन् 1948 के बीच हुई जिसमें रजाकारों के 800 सैनिक मारे गए थे।

महात्मा नारायण स्वामी इस हैदराबाद सत्याग्रह के प्रथम सर्वाधिकारी थे। उनकी प्रथम गिरफ्तारी 31 जनवरी 1939 को हैदराबाद में एवं दूसरी गुलबर्गा में 4 फरवरी, 1939 को हुई। जेल में उन्हें लोहे के भारी कड़े पहनाए गए। 6 फरवरी को उन्हें एक वर्ष की कड़ी कैद की सजा सुनाई गई। जेल जीवन के प्रथम डेढ़ महीनों में आपको प्रतिदिन आठ घंटे कठोर परिश्रम करना पड़ा। वह चरखे पर दो सेर सूत दुहरा करते थे। इस बीच उनका शारीरिक भार 166 से घट कर 161 पौण्ड हो जाने पर काम में छूट दी गई। जेल सुपरिटेण्डेंट उनके आचरण एवं व्यवहार से उनका भक्त बन गया। एक दिन वह अपनी पत्नी और बच्चों को जेल ले गया और महात्मा जी से आग्रह किया कि वह उनके सिरों पर हाथ रखकर उन्हें आशीर्वाद दें। महात्माजी ने उसकी इच्छा पूर्ण की। जेल डायरेक्टर सर हालेंस भी उनके प्रति श्रद्धा भाव रखते थे। गुलबर्गा के बन्दी जीवन में उन्होंने छांदोग्य–उपनिषद का भाष्य किया। वे जेल मे सायं 4 बजे तक उपनिषदों की नियमित कथा भी करते थे। यह तथ्य भी उल्लेखनीय है कि इस सत्याग्रह में 12,000 गिरफ्तारियाँ हुई थीं एवं लगभग 30 आर्य वीर जेल जीवन की विपरीत परिस्थितियों एवं यातनाओं के कारण शहीद हुए। इस सत्याग्रह की सफलता के पश्चात् देश भर में महात्मा जी का भव्य स्वागत किया गया एवं उन्हें अभिनन्दन पत्र भेंट किए गए।

महात्मा नारायण स्वामी जी दिसम्बर, 1923 से 1937 तक (14 वर्ष) एवं सन् 1941, 1945 से 1947 के वर्षो में सार्वदेशिक सभा के प्रधान रहे। यह कार्यकाल सार्वदेशिक सभा का स्वर्णिम काल रहा। 15 सितम्बर 1939 को आपका रामगढ़ तल्ला, जनपद नैनीताल में अभिनन्दन कर एक हाई स्कूल की स्थापना का निर्णय लिया गया। 1 जुलाई को स्थापित यह स्कूल सन् 1943 में हाई स्कूल बना। स्कूल का नाम 'नारायण स्वामी उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, रामगढ़' रखकर रामगढ़ की जनता ने महात्मा जी की सेवाओं के प्रति अपनी कृतज्ञता प्रदर्शित की। हमारा सौभाग्य है कि हमें दो बार इस स्थान पर जाने का अवसर मिला। एक रात्रि हमने अपने अनेक मित्रों के साथ इसी विद्यालय में शयन किया था। यहीं पर महात्मा जी का एक आश्रम है जो जीर्ण–शीर्ण अवस्था में है। आश्रम पहाड़ियों के मध्य एक नदी के तट पर स्थित है और आश्रम से लगभग 100 मीटर पर ही अलमोड़ा के लिए राजमार्ग जा रहा है। आश्रम के चहुंओर का दृश्य अत्यन्त मनोहर, भव्य एवं आकर्षक है। हमारा निवेदन है कि हमारी आर्य सभाओं व आर्य समाज के धनी ऋषि–भक्तों को इसकी सुध लेनी चाहिये और यहाँ एक गुरूकुल आदि खोलकर इसका पुनरुद्धार करना चाहिए। महात्मा जी के नेतृत्व में काशी विश्वविद्यालय में प्रो. महेश प्रसाद मौलवी की पुत्री कल्याणी देवी को वेद मध्यमा श्रेणी में प्रवेश को लेकर भी आर्य समाज ने अपना समर्थन प्रदान किया था जिसमें उसे सफलता मिली थी।

महात्मा जी ने साहित्य के क्षेत्र में भी उल्लेखनीय योगदान दिया है। उनके ग्रन्थों में उनका किया हुआ 11 उपनिषदों का हिन्दी भाष्य, योग दर्शन का भाष्य, आत्म दर्शन, मृत्यु और परलोक, विद्यार्थियों की दिन चर्या, साम्यवाद पर एक ग्रन्थ, आत्म–कथा आदि प्रमुख साहित्य है। उनका किया हुआ 11 उपनिषदों का भाष्य आध्यात्म पिपासुओं के लिए एक महत्वपूर्ण ग्रन्थ है जिसका प्रकाशन विजयकुमार गोविन्दराम हासानन्द, दिल्ली से हुआ है। पं. राजेन्द्र जिज्ञासु जी ने महात्मा जी की बालोपयोगी प्रभावशाली जीवनी लिखी है।

मुस्लिम लीग सरकार ने सिंध प्रांत में सन् 1944 में आर्यसमाज और मनुष्यमात्र के धर्मग्रन्थ ''सत्यार्थ प्रकाश'' के चौदहवें समुल्लास पर प्रतिबन्ध लगा दिया। इसके विरोध में 14 जनवरी 1947 को कराची में महात्मा जी ने सत्याग्रह का शुभारम्भ किया। यहां भी सफलता ने आपके चरण चूमे। गढ़वाल की डोला–पालकी प्रथा के अन्तर्गत सवर्णो द्वारा शिल्पकारों के प्रति किए जाने वाले धार्मिक पक्षपात, अन्याय व शोषण को भी उनके नेतृत्व में दूर किया गया। शुद्धि, धर्म प्रचार एवं प्लेग रोगियों की सेवा के क्षेत्र में भी उन्होंने महत्त्वपूर्ण सेवाएं दीं। अपेण्डिक्स के जान लेवा आपरेशन में बिना पूर्ण बेहोश हुए आपरेशन करवाकर आपने डाक्टरों को भी आश्चर्य में डाल दिया था। 82 वर्ष की अवस्था में पेट का कैंसर बरेली में 15 अक्तूबर, 1947 को उनकी मृत्यु का कारण बना। उनकी दिनचर्या और जीवन से अनुमान होता है कि उन्हें धर्म, अर्थ, काम व मोक्ष चारों पुरुषार्थो की सिद्धि प्राप्त हुई।

आज आर्यसमाज और देश को महात्मा नारायण स्वामी जी जैसे कर्मठ व धर्म–समाज सेवी नेताओं की आवश्यकता है। उनके जीवन का अनुकरण देश की वर्तमान और भावी पीढ़ियों को नई दिशा देकर सफलता प्रदान कर सकता है।

पताः 196 चुक्खूवाला–2
देहरादून–248001
फोनः 09412985121

thearyasamaj.org

संस्कृति की शल्यक्रिया

● डॉ. सुरेन्द्र कुमार शर्मा

मुझे एक सज्जन रास्ते में मिल गए। बातचीत हुई। प्रसंगवश बोले, ''हमारी संस्कृति विकृति की ओर जा रही है।'' मैं चौंका और बोला, ''ये क्या कह रहे हैं आप? जो विकृति को प्राप्त हो जाय, वह संस्कृति हो ही नहीं सकती। संस्कृति तो इस देश की उदात्त धरोहर है, अनवरत प्रवाहित होने वाली पावनी गंगा है। ऋषि –मुनियों की तपः साधना का पुण्यफल है।''

पर वह नहीं माने। बोले, ''मुझे मनोहर वाक्य जाल में मत उलझाइये। संस्कृति के यथार्थ स्वरूप से अवगत कराइये। क्या–क्या समेटे है यह संस्कृति स्वयं में, मुझे भी समझाइये।

तब मुझे बेचारी संस्कृति की शल्य क्रिया (ऑपरेशन) के लिए विवश होना पड़ा। मैंने उसे भारतीय मानदंडों के ऑपरेशन थेटर पर लिटा दिया फिर तर्क– विवेक की छुरी और कैंची हाथ में पकड़ ली और ज्यों ही उसके अन्तस् पर चिन्तन का चीरा लगाया तो भावों का लहू बहने लगा। मैंने एकाग्रता की रूई से लहू को साफ किया और ज्यों ही संस्कृति के हृदय तल की ओर झांका तो पहली चीज जो मुझे दृष्टिगत हुई, उसका नाम है–संस्कार।

संस्कारः

संस्कार के रूप में मुझे संस्कृति के अन्दर बड़े काम की चीज मिल गई। संस्कृति ही तो संस्कारों को पुष्ट एवं परिपुष्ट करती है। आपने पढ़ा ही होगा– 'जन्मना जायते शूद्रः कर्मणा द्विज उच्यते।'' अर्थात् मनुष्य जन्म से शूद्रवत् उत्पन्न होता है और कर्मों से द्विज कहलाता है। कर्मों से अभिप्राय है – संस्कारित करने वाले कर्म। प्रत्येक कर्म द्विज नहीं बना सकता। मनुष्य यावज्जीवन जो भी कर्म करता है, उससे संस्कार बनता है। संस्कारों के आधार पर मनुष्य को नया शरीर मिलता है। यह शरीर मनुष्य का भी हो सकता है और पशु का भी। गीता में कहा गया है– 'यं यं वादि स्मरन् भावं त्यज्यन्ते कलेवरम्' अर्थात् मनुष्य जिस भाव से शरीर का त्याग करता है उसको उसी भाव के अनुसार नया शरीर मिलता है। यह भाव ही तो संस्कार है।

संस्कृतः

फिर जब मैंने संस्कृति हृत्तल पर दूसरा चीरा लगाया। मैंने गौर से देखा तो मुझे संस्कृत का स्पन्दन दृष्टिगत हुआ। संस्कृत और संस्कृति में 'इ' का ही तो अन्तर है। यदि संस्कृत पूंजीभूत नवनीत है तो संस्कृति उसका द्रवीभूत घृत। हमारे देश की संस्कृति संस्कृत का ही द्रवित रूप है। 'ईशावास्यमिदं सर्वं...' वैदिक मंत्र वैदिक संस्कृत का ही सुवासित पुष्प है। इस देश में संस्कृति की जो भाव धाराएं प्रवाहित हुई हैं उनका गोमुख संस्कृत ही तो है। संस्कृत के बिना वैदिक युग से प्रवाहित होने वाली विभिन्न दार्शनिक, साहित्यिक, सामाजिक धाराओं की कल्पना भी नहीं की जा सकती।

कृतिः

संस्कृति की शल्य क्रिया करते हुए हमें उसके अन्दर ही एक छोटा सा बिन्दु दृष्टिगत हुआ। उसका नाम है– 'कृति'। यह बिन्दु 'सम' उपसर्ग से आछन्न का। कृति का अर्थ है– रचना, जो रची गई हो। वह कौन सी कृति है जिससे सांस्कृतिक, धार्मिक या आध्यात्मिक भाव धारा अविरल रूप से प्रवाहित हो रही है? उस कृति का नाम है– वेद। प्रमाण भी है वैदिक मंत्र ही। 'ऋचः सामानि जज्ञिरे' अर्थात् ऋग्वेद, सामवेद आदि ईश्वरीय कृतियाँ हैं। यदि वेद न होते तो क्या हमारी आध्यात्मोन्मुख ज्ञान पिपासा शान्त हो पाती। माँ शिशु को जन्म देती है लेकिन उससे पहले ईश्वर माँ के स्तनों को दूध से भर देता है। इसी प्रकार ईश्वर भी हमें इस संसार में जन्म देने से पहले क्या हमारे लिए ज्ञान–पय की व्यवस्था न करता? उस अमृत पय का ही तो नाम है– वेद। अतः वेद की यह विद्या हमें मुक्ति के द्वार तक पहुँचा देती है– 'सा विद्या या विमुक्तये।'

सम्ः

जैसे शल्य क्रिया करते हुए हमें सबसे ऊपर त्वचा दृष्टिगत होती है और सबसे पहले उसी पर चीरा लगाया जाता है उसी प्रकार 'संस्कृति' पर 'सम' शब्द की पर्त चढ़ी हुई है। अतः इस 'सम' उपसर्ग का भी विश्लेषण कर लेते हैं। 'सम्' का अर्थ है– समानता। गीता में कहा गया है– 'समत्वं योग मुच्यते।' अर्थात् समत्वं को ही योग कहते हैं। योग क्या है? चित्त वृत्तियों की निरोधी चित्त वृत्तियाँ होती हैं– सुखात्मक और दुःखात्मक। सुख और दुःख में सम रहने वाले को ही 'स्थित प्रज्ञ' कहते हैं। अतः 'सम्' के रूप में हमें संस्कृति स्थित प्रज्ञता की ओर ले जाती हैं।

'कृ' धातुः

संस्कृति शब्द की चतुर्विध शल्य क्रिया करने के उपरान्त मुझे लगा कि कुछ ऐसा है, जो छूट गया है और पकड़ में नहीं आ रहा। अचानक मन में आया कि संस्कृति को क्रियाशील कौन रखता है? तब याद आया कि 'कृ' धातु ही संस्कृति की क्रियाशीलता का मुख्य कारण है। क्रिया है तो संस्कृति है और क्रिया नहीं तो निष्क्रिय। इस देश में कितनी ही विदेशी संस्कृतियाँ आईं परन्तु कुछ समय बाद निष्क्रिय हो गईं। पर बाकी है नामो निशां हमारा।' वैदिक संस्कृति आज भी जीवन्त है, प्रवाहमान है, क्रियाशील है क्योंकि यह कर्म करने पर विश्वास करती है– 'कुर्वन्नेवेह कर्माणि जिजीविच्छेत् शतं समाः।' अर्थात् हम कर्म करते हुए सौ वर्ष तक जीने की कामना करें। यह उद्घोषणा करती है– कर्मण्येवाधिकारस्ते। यह कर्मण्यता ही भारतीय संस्कृति की आत्मा है और यह आत्मा सूक्ष्म होने के कारण दृष्टिगत नहीं होती।

संस्कृति की शल्य क्रिया के उपरान्त मैंने अपने मित्र से पूछा, 'बताइये, क्या अभी भी आपको संस्कृति में विकृति दिखाई देती है? इस पर मेरे मित्र बोले, 'मेरा भ्रम दूर हो गया है। वास्तव में वैदिक संस्कृति ही हमारे भारत देश की आत्मा है।'

– 230, आर्यवानप्रस्थ आश्रम
ज्वालापुर (हरिद्वार)

शहीदों के खून से आजाद हुआ है हैदराबाद

● डॉ. चंद्रशेखर लोखण्डे

मराठवाडा के औरंगाबाद शहर में ''तामिरे मिल्लत'' संस्था के कुछ पदाधिकारियों ने अपने देशद्रोही वक्तव्य को उगलते हुए कहा कि मीर उस्मान अली 7वें निजाम के साथ 'जैसे थे' करार तय होने के पश्चात् भी सरदार वल्लभ भाई पटेल ने धोखाधड़ी और जबरदस्ती से पोलिस एक्शन के नाम पर सेना भेजकर हैदराबाद रियासत पर कब्जा पर लिया। यह निजाम मीर उस्मान अली के साथ धोखा ही तो था। यह मुक्ति संग्राम काहे का? यह तो धोखाधड़ी थी, इतिहास को तोड़ मरोड़कर पेश किया जा रहा है स्कूलों में गलत ढंग से बच्चों को इतिहास पढाया जा रहा है। इसलिए 17 सितम्बर यह हैदराबाद मुक्ति संग्राम दिन के नाम से नहीं मनाया जाना चाहिए।''यह विषैले वक्तव्य हैं'' ''तामिरे मिल्लत'' के संयोजक डॉ. चिरंजीवी कोल्लूरी, डॉ.एन. पांडुरंग रेड्डी और जियारउद्दीन नैय्यर के।''

''ऑल इंडिया मजलिस ए–तामिरे मिल्लत'' यह हैदराबाद में सन् 1950 में स्थापित संस्था निजाम और ''आजाद हैदराबाद'' की तरफदारी करने वाली संस्था है। आज हैदराबाद को 65 साल भारत वर्ष में शामिल होने के पश्चात भी यह विद्रोही बेसुरा राग अलाप रही है। उक्त तीनों पदाधिकारी अपने प्रेस वक्तव्य में कहते हैं कि ''1947 में लगभग सारी रियासतें हिन्दुस्तान में समाविष्ट हो गयीं लेकिन हैदराबाद रियासत पर भारत सरकार ने शामिल होने के लिए सैनिक दबाव डाला। निजाम भारत में शामिल नही होना चाहता था, इसलिए उसने तत्कालनि सरकार से जैसे थ। करार किया। इसका मतलब यह था कि एक वर्ष तक राज्यों कि त्यों परिस्थिति रखी जाय। लेकिन 12 सितंबर 1948 को प्रधान मंत्री पं. जवाहरलाल नेहरू विदेश के जाने के बाद सरदार पटेल ने हैदराबाद के चारों ओर से रियासत में सेना घुसवा दी। यह निजाम और हैदराबाद के साथ धोखा था।'' इन तीनों सदस्यों को जान लेना चाहिए कि जब जूनागढ़, भोपाल और कश्मीर जैसी मुस्लिम बहुल रियासतें भारत में शामिल कर ली गयी थीं, तो क्या कारण था कि हैदराबाद रियासत इससे अछूती रह जाय। वैसे लॉर्ड मांऊटबेटन के निर्देशानुसार और बहुसंख्य जनता के मतानुसार वह रियासत भारतवर्ष या पाकिस्तान में शामिल हो सकती थी, जबकि भौगोलिक स्थिति और जनमत पाकिस्तान के खिलाफ थे। 89% प्रतिशत हैदराबाद की जनता हिन्दुस्तान में शामिल होने की इच्छुक थी, फिर ''तामिरे मिल्लत'' के पदाधिकारी यह कैसे कह सकते हैं। कि हैदराबाद आजाद रहना चाहता था राज्य जमीन के टुकड़े को नहीं वहाँ की जनता और उसकी संस्कृति को कहते हैं।

हैदराबाद की 89% हिन्दू जनता सन् 1937 से सातवें निजाम के खिलाफ जी जान से संघर्ष कर रही थी। आर्यसत्याग्रह के एक वर्ष पूर्व से अर्थात् 1937 से1939 तक लगभग 41 आर्यो की हत्याएँ हो चुकी थीं स्टेट कॉंग्रेस अपने तरीके से संघर्ष कर रही थी यहाँ तक कि निजाम के मजहब को मानले वाला शोएब उल्लाखाँ हैदराबाद को निजाम से निजात दिलाने के लिए 1948 में शहीद हो गया।

शेष पृष्ठ 11 पर ☞

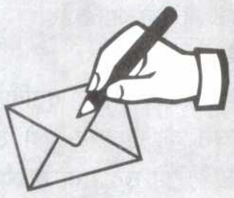

पत्र/कविता

लुप्त हो रहे हैं-पीपल और बरगद

यह खेद है कि अब पीपल और बरगद के वृक्ष लुप्त होने जा रहे हैं। या इनको सुरक्षा प्रदान कि जानी चाहिए। पर्यावरणविदों की मान्यता है कि पीपल और बरगद के वृक्ष सबसे प्रबल ऑक्सीजन गैस के स्त्रोत हैं। वायु मंडल में बढ़ते कार्बन डाइआक्साइड के ग्राफ को कम करने में लिये इन वृक्षों का रोपण समाज के हित में सर्वोपरी है। वैज्ञानिकों की एंसी मान्यता है कि पीपल का वृक्ष रात्री में भी आक्सीजन गैस को प्रवाहित करता है।

यह भी उल्लेखनीय है कि हमारे देश में सदियों से पीपल और बरगद के वृक्षों के रोपण की परम्परा रही है। समस्त हिन्दू संस्कृति के प्रतिष्ठानों और परिक्षेत्रों, विधालयों, सामाजिक स्थलों और आर्य समाज के परीसरों के पीपल और बरगद के विशालकाय वृक्ष आज भी उपलब्ध हैं।

हमारा समस्त हिन्दू संस्कृति के उपासको से नम्र निवेदन है कि प्रत्येक परिसर में यथा सम्भव पीपल और बरगद के पौधों का रोपण कर पर्यावरण को शुद्ध बनाने का प्रयास करें तथा स्वच्छ भारत एवं स्वस्थ भारत को बल प्रदान करें।

कृष्ण मोहन गोयल
अमरोहा–244221

****

जब तक रहेगी दुनिया रोशन नाम रहेगा

त्यागमूर्ति हंसराज बिजवाड़ा वासी,
परम हितेषी, तेजस्वी, ईश्वर–विश्वासी।
कर्मवीर ने जीवनभर शुभ कर्म कमाया,
विद्या के प्रसार को जीवन का लक्ष्य बनाया।

नहीं लिया संन्यास, न पहना भगवा चोला,
सादे कपड़ों में ही सच्चा कर्म टटोला।
जीवन से प्यारी थी जीवन की मर्यादा,
जीवन का सब रंग–ढंग था सीधा सादा।

कर डाला साकार ऋषि जीवन का सपना,
सब कुछ किया न्योछावर कुछ समझा न अपना।
हुई प्रभ भक्ति की सच्ची सफल कमाई,
नेक कमाई ऐसी, जिस पर आंच ना आई।

समय ने देखा ऐसा जीवन का संग्राम,
सपना सा बन कर रह जाता था आराम।
भले ही आये जीवन में कई संकट भारी,
खतरों से ना डरे, कभी हिम्मत ना हारी।

मन के शिव संकल्पों ने जीवन झंझोड़ा,
बुरे रिवाजों के झूठे बन्धन को तोड़ा।
जीवन को तप के सांचे में ऐसा ढाला,
फेरी तो फेरी मन में मनकों की माला।

महापुरुष की सेवा भक्ति याद रहेगी,
यादों की प्यारी बस्ती आबाद रहेगी।
समय ने शायद ही देखा कोई ऐसा दानी,
विद्या दान से बड़ी न कोई सेवा मानी।

मातृभूमि की सेवा का जागा जो प्यार,
कॉलेजों और स्कूलों की कर दी भरमार।
डी.ए.वी. के नाम ने ऐसी धूम मचा दी,
वातावरण में गूंज उठी अपनी आजादी।

मुझे भी अवसर मिल पाया दर्शन करने का,
तृप्त हुआ मन पीकर जल शीतल भरने का।
विरला ही कोई ऐसा धर्म–पुजारी,
परम पिता ईश्वर का सच्चा आज्ञाकारी।

दयानन्द के पद–चिह्नों पर चलने वाला,
सादा जीवन के सांचे में ढलने वाला।
जब तक रहेगी दुनिया रोशन नाम रहेगा,
फूलता–फलता प्यारा सच्चा काम रहेगा।

वेद प्रकाश शर्मा धारीवाला
103 अंकुर बी–हालर, वलसाड–396001

पुण्य कर्म स्वतन्त्रता और पाप कार्य परतन्त्रता की ओर ले जाते हैं

मनुष्य अपने पूर्वकृत कर्मो के फलों के वशीभूत होकर ही कोई कार्य करता है। यदि हम किसी महान सुख अथवा विनाश कारी दुःख में अपने को अनुभव करते है तो वह हमारे पुण्य–पाप कर्मों का ही परिणाम है। आकस्मिक आने वाले दारुण दुःख भी हमारे द्वारा कृत कर्मो का फल है। हम अपने पूर्व कृत कर्मो के प्रभाव से ही उस महाविनाश के स्थल पर आऐ हैं। जीवन में आने वाला कोई भी बड़े से बड़ा आकस्मिक दुःख हमारे कर्मो का ही फल है।

कुछ विद्वानों का मत है कि हमें बिना कर्म किए ही दारुण दुःख मिल सकता है। यह मत युक्ति तथा प्रमाण के विरुद्ध है। मनुष्य पुण्य कर्मो का फल भोगने में स्वतन्त्र तथा पाप कर्मो का फल भोगने में परतन्त्र होता है। पुण्य कर्म हमें स्वतन्त्रता की ओर ले जाते हैं तथा पाप कर्म परतन्त्रता की ओर ले जाते है। परतन्त्रता के कारण ही व्यक्ति दुःखों को भोगता है। स्वतन्त्रता की अवस्था में तो सुख का ही वरण करता है।

हमारे द्वारा किए किसी कर्म का फल अनेक बार मिल सकता है तथा अनेक प्रकार से मिल सकता है। अनेक कर्म जुड़कर भी एक फल भी दे सकते हैं। कर्मो के फलीभूत होने की गति अत्यन्त गहन है। आत्मा अनेक जन्मों से अनेक प्रकार के कर्म करता आ रहा है। किन कर्मों के फलीभूत होने का समय आ गया है, यह जानने का प्रयत्न करना चाहिए। जीवात्मा कर्म करने में स्वतंत्र है। इसलिए उसके द्वारा भविष्य में किए जाने वाले सभी कर्मो की भविष्यवाणी कोई नहीं कर सकता। जीवात्मा फल भोगने में परतंत्र है। उसके द्वारा किए कर्म का किस परिस्थिति में क्या परिणाम हो सकता है इसका अनुमान किया जा सकता है। किसी के भविष्य को पूर्णरूप से कोई नहीं जान सकता। यहाँ तक कि परमात्मा भी नहीं। जड़ ऋत् से बन्धा होता है चेतन नहीं। चेतन आत्मा स्वतन्त्र है, ऋत् से स्वतन्त्र है। वह अन् ऋत भी चल सकता है। आत्मा अपने पाप कर्मो द्वारा उत्पन्न परतन्त्रता के जाल में फँसा हुआ ही स्वतन्त्र कार्य करता है।

कृपाल सिंह वर्मा
253 शिवलोक, कंकर खेड़ा, मेरठ
9927887788

****

thearyasamaj.org

☞ पृष्ठ 07 का शेष

जीवात्मा सत् स्वच्छ...

जब तक शरीर में आत्मा रहता है तब तक मन और बुद्धि में जड़त्व नहीं होता, ये दोनों ही अपना कार्य करते रहते हैं। प्रश्न– यदि शरीर के सारे उपकरण 'मैं' द्वारा सक्रिय है, तो मेरी इच्छा से जैसे इन्द्रियाँ कार्य करती हैं वैसे ही शरीर के अन्दर की क्रिया क्यों नहीं होती? उत्तर– मेरे प्राण का कार्य प्राण करता है और मन का कार्य मन करता है। अतः शरीर के अन्दरुनी उपकरणों को सक्रिय रखना प्राण का धर्म है। (जिसका एक भी उपकरण किडनी आदि को विज्ञान नहीं बना सकता) और मेरा कार्य है, शरीर के इन्द्रियों द्वारा कर्म करना और उन्हीं साधनों द्वारा सुख–दु:खों के फलों को भोगना।

प्रश्न–मानव कर्मानुसार उसे उसका स्थूल फल आर्थिक तो मिल जाता है, पर उसके भले बुरे का सूक्ष्म फल रूप संस्कार उसके आत्मा से सम्बन्धित सूक्ष्म शरीर पर पड़ता रहता है, मृत्यु के पश्चात जीवन में किया कराया उसका अंतिम संस्कार अर्थात वासना, वही उसके साथ जाता है और वही उसके अनुसार किसी योनि में जन्म का कारण बनता है, यह सब कहाँ तक सत्य है? उत्तर– देखिये जब किसी रोग, दुर्घटना अथवा किसी के मार देने से–शरीर के उपकरण नष्ट हो जाते हैं, तब शरीर से आत्मा के साथ सूक्ष्म शरीर का वियोग हो जाता है। अर्थात मृतक का प्राण, प्राण तत्व में चला में चला जाता है, मरने वाले को कुछ भी पता नहीं, वह सर्वदा के लिए अज्ञान हो जाता है, एक झटके में सब गति बन्द, शरीर शीतल हो जाता है, क्योंकि शरीर में जो गर्मी भी वह सूक्ष्म शरीर से थी, और हृदय में जो गति थी वह भी सूक्ष्म शरीर के प्राण से थी, जब सूक्ष्म शरीर ही नहीं रहा तो स्थूल शरीर भी नहीं रहा। अतः आत्मा के न रहने से यह अपवित्र हो गया। तात्पर्य यह कि जब मृतक का प्राण प्राणतत्वों में चला जाता है, तब उस प्राण– (अर्थात सूक्ष्म शरीर) पर जो पूर्ण का संस्कार भला, बुरा का पड़ा होता है, क्या होता है। किसी को कुछ पता नहीं। किन्तु एक उदाहरण से इतना समझ में आ जाता है, कि गर्भ में गर्भ की स्थापना प्राण के द्वारा ही होती है और जन्म के पश्चात जब शिशु सोता है तो अर्धनिद्रा में अपने पूर्व के सुखद या दु:खद घटनाओं के कारण ही वह रोने और हँसने जैसे हरकत करता है। ऐसा होना जड़ का धर्म नहीं है और न स्वाभाविक है, ऐसा रोना हँसना उसके पूर्व का संस्कार ही कारण है। देखिये जब अग्नि की भट्टी से लोहा निकलता है तब लाल रहता है फिर धीरे–धीरे जैसे वह काला हो जाता है– वैसे ही उसका पूर्व का स्मरण अथवा दृश्य धीरे–धीरे अदृश्य हो जाता है।

– मु. पो. मुरारई, जिला वीरभूमि (पं. बंगाल)–731219, मो. 8158078011

☞ पृष्ठ 09 का शेष

शहीदों के खून से ...

इसके बावजूद ये लोग कह रहे हैं कि सरदार पटेल ने हैदराबाद के साथ धोखा किया यह सरासर झूठ और देशद्रोह है। इससे पूर्व तेलंगाना के मुख्यमंत्री की बेटी सांसद के. कविता ने भी इसी प्रकार के वक्तव्य देकर अपने आपको सुर्खियों में किया था।

उनको भी उत्तर देते हुए मैंने कहा था कि– जब 225 वर्ष पूर्व अर्थात, ई सन् 1310 तक यह भाग वरमंगल (वरंगल) के काकतीय वंश के राजाओं का राज्य था। उसके बाद 1724 में आसाफजाही वंश और मध्य एशिया के समरकंद बुखारा जिसका पैत्रिक स्थान था उस निजाम उल्मुल्क मीर कमरूद्दीन चिन किलिच खान ने हैदराबाद पर अपनी सत्ता प्रतिस्थापित की। स्वा दो सौ साल हैदराबादी जनता को गुलाम बनाकर रखने से क्या हैदराबाद विदेशी आक्रान्ताओं का राज्य हो गया? यह तो हैदराबादी जनता और उनकी मातृभूमि के साथ अन्याय है।

उनको भी उत्तर देते हुए मैंने कहा था कि– जब 225 वर्ष पूर्व अर्थात, ई सन् 1310 तक यह भाग वरमंगल (वरंगल) के काकतीय वंश के राजाओं का राज्य था। उसके बाद 1724 में आसाफजाही वंश और मध्य एशिया के समरकंद बुखारा जिसका पैत्रिक स्थान था उस निजाम उल्मुल्क मीर कमरूद्दीन चिन किलिच खान ने हैदराबाद पर अपनी सत्ता प्रतिस्थापित की। स्वा दो सौ साल हैदराबादी जनता को गुलाम बनाकर रखने से क्या हैदराबाद विदेशी आक्रान्ताओं का राज्य हो गया? यह तो हैदराबादी जनता और उनकी मातृभूमि के साथ अन्याय है।

निजाम ''जैसे थे'' करार के अनुसार चुप थोड़े ही बैठा था। करार की आड में वह भारत के साथ संघर्ष के लिए अनेक षड्यन्त्र रच रहा था। जैसे बहुसंख्य हिन्दुओं को बाहर खदेड़कर और बिहार उत्तरप्रदेश से मुस्लिम मुहाजिरों को बुलाकर रियासत को मुस्लिम बहुल बनाना, मुस्लिम बहुल बनाकर अन्य राष्ट्रों की सिफारिश से सार्वमत करवाना, रजाकारों को हिंदुओं पर जुल्म करने के लिए उकसाना, चकोस्लावाकिया से छुपे तौर पर 30 लाख पौण्ड के हथियार पाकिस्तान के रास्ते मँगवाना इत्यादि। यहाँ तक कि उसने सिडनी कॉटन द्वारा पाकिस्तान, गोवा के रास्ते करोड़ों के हथियार मंगवाये और रजाकारों (हिंस्र मुस्लिम स्वयंसेवक) में बटवायें थे। ''जैसे थे'' करार द्वारा भारत सरकार ने निजाम यथास्थिति बनाए रखने के लिए मोहलत दी थी इसका मतलब यह तो नहीं था कि उसका दुरुपयोग कर जनता और भारत सरकार से धोखाधड़ी करे।

''जैसे थे'' करार का उद्देश्य यह भी नहीं था कि हैदराबाद पूरी तरह से निजाम को सौंप दिया गया हो। उसका अर्थ यह था कि बातचीत और मेल मिलाप से हैदराबाद को भारत में शामिल करने का कोई रास्ता निकाला जाय। पं. जवाहर लाल नेहरू ने कश्मीर के मामले में जो गलती की थी (राष्ट्र संघ में कश्मीर को ले जाकर) वह गलती गृहमंत्री सरदार बल्लभभाई पटेल हैदराबाद के बारे में नहीं करना चाहते थे। इसलिए एक वर्ष के लिए ''जैसे थे'' करार दोनों की सहमति से किया गया था। उस दुरुपयोग पहले निजाम ने किया। जब सरदार पटेल को यह पता चला तो उन्होंने यह रास्ता अपनाया और रियासत हैदराबाद को 17 सितबर 1947 के पश्चात् 1 वर्ष 1 महीना, 1 दिन के बाद निजाम के चंगुल से मुक्त करवाया।

संस्कृतिरक्षण मंच
सीताराम नगर, लातूर (महाराष्ट्र)
मो. 09922255597

डी.ए.वी. सेक्टर-14, गुडगाँव में आयोजित हुआ राष्ट्रीय एकता दिवस

डीएवी. पब्लिक स्कूल सैक्टर–14 गुडगाँव में लौहपुरुष सरदार बल्भभाई पटेल की 139वीं जयंती के उपलक्ष्य में राष्ट्रीय एकता दिवस समारोह का आयोजन किया गया। समारोह में 40 क्षेत्रीय विद्यालयों के लगभग 550 छात्रों ने सहर्ष सहभागिता दर्शायी।

कार्यक्रम का शुभारम्भ स्वर्गीय बल्लभभाई पटेल के व्यक्तित्व तथा कृतित्व की चर्चा के द्वारा किया गया तथा विद्यालयों की प्रधानाचार्या श्रीमती अपर्णा एर्री जी ने विद्यालय के छात्रों को तथा अन्य विद्यालय के लगभग 550 छात्रों को एकता व अखंडता को बनाए रखने हेतु स्वयं को देशहित समर्पित करने की शपथ दिलवाई। तत्पश्चात विविधता में एकता तथा प्रेम व सौहार्द भी भावना जगाने वाले स्लोगन लिखित बैनर लेकर छात्रों की दौड़ करवाई गई।

समारोह को रंगारंग रूप प्रदान करने के लिए विभन्न अंतर्विद्यालयीय प्रतियोगिताओं जैसे–पोस्टर रचना, असाधारण साहस और वीरता का प्रदर्शन करने वाले भारतीय नेताओं का प्रतिरूपण, लौहपुरुष बल्लभभाई पटेल पर प्रश्न–मंच, रंगोली के साथ–साथ नुक्कड़ नाटक आदि विविध गतिविधियों का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का मुख्य आकर्षण प्रश्न–मंच प्रतियोगिता रही जिसकें द्वारा सरदार बल्लभभाई पटेल के व्यक्तित्व की समस्त जानकारी छात्रों को मिली। कार्यक्रम के अंत में विजेता विद्यालयों को पुरस्कृत करके प्रोत्साहित किया गया।

thearyasamaj.org

Delhi Postal R. No. D.L. (ND)-11/6066/2012-14
अग्रिम अदायगी के बिना भेजने का लाइसैंस नं. U(C)-103/2012-14
POSTED AT N.D.P.S.O. ON 10-11/12/2014
रजिस्ट्रेशन नं. आर० एन० आई० 39/57

with best Compliments

D.A.V. COLLEGE FOR GIRLS

Yamuna Nagar-135001 (Haryana)

Estd. 1958 A Multi Faculty Post-Graduate College

(Affiliated to Kurukshetra University, Kurukshetra)

NAAC Accredited 'A' Grade

College with Potential for Excellence

BEST WOMEN COLLEGE OF KURUKSHETRA UNIVERSITY, KURUKSHETRA

ADMISSION NOTICE –2014-2015

ONLINE REGISTRATION for Admission is open to following classes/courses:

UNDER GRADUTE COURSES

- B.A. (22 subjects)
- B.Com. (General , Advertising Sales Management and Sales Promotion, Banking & Insurance, Computer Applications, E-Commerce)
- B.Com. Honours
- B.Sc. (Computer Applications, Computer Science, Industrial Microbiology, Medical, Non Medical)
- B.Sc. Fashion Designing
- B.A. Mass Communication
- B.A. Honours (English, Mathematics, Economics, Psychology)

POST GRADUATE DEGRE& DIPLOMA COURSES

- M.A. (Applied Yoga & Health, Economics, English, Human Rights & Value Education)
- M.Com.
- M.Sc. (Mathematics, Computer Science Software)

DIPLOMA COURSES

- P.G. Diploma in (Computer Graphics & Animation (Evening)
- P.G. Diploma in Guidance & Counseling (Evening)
- P.G. Diploma in Retail Management (Evening)
- P.G. Diploma in Skin & Hair Therapy (Evening)
- P.G. Diploma in Translation (Evening)
- P.G. Diploma in Web Designing and Office Automation (Evening)
- P.G. Diploma in Yoga Therapy (Evening)
- P.G. Diploma in Yoga Therapy(Morning)
- P.G. Diploma in Nutrition & Dietetics

UGC SPONSORED (ADD ON COURSES) - 18

OTHER DIPLOMA & CERTIFICATE COURSES - 11

HOBBY COURSES - 41

Exclusive courses sponsored by UGC, New Delhi from the session 2014-2015

BACHELOR OF VOCATIONAL (B.VOC.)

- Software Development
- Hospitality Management

→ Only College in Haryana to run these courses

COMMUNITY COLLEGE SCHEME DIPLOMAS IN

- Medical Lab Technology
- Beauty & Wellnes

→ Only College in Haryana, Uttar-Pradesh & Uttara-khand to run these courses

COURESES LIKELY TO BE INTRODUCED from the session 2014-2015

- M.Sc. Fashion Designing
- M.Sc. Chemistry
- B.Sc. Hons. Math
- B.Sc. Home Science
- Post Graduate Diplomas in Fashion Designing, Interior Designing and Textile Designing

CAREER ORIENTED COURSES

- House Keeping
- Printing Technology
- Stock Marketing & Trading Operation

EXCELLENT FACILITIES AVAILABLE

Hostel Sports Cultural

Special incentive for National/Internatioal Sports Women-Free Boarding/Lodging and Education

Admission Starts From 01-07-2014

Last date of receipt of forms is 30-06-2014 / Regular classes start on 16-07-2014 For further details consult College Website/Prospectus, Prospectus available on payment of Rs. 150/250* for SC/BC Rs. 65/125* by Cash.

Phone :- 01732-224674, 228152. Fax :- 01732-260561
E-mail : davcollegeynr@rediffmail.com
Website : www.davyamunanagar.in
Mob. Nos. 09215087200-12, 15

Dr. Ms. Sushma Arya
Principal
Mob. No.: 09466117105

मुद्रक व प्रकाशक – **एस.के.शर्मा,** सभा मंत्री द्वारा **मदन गोयल** के प्रबंध में **अरावली प्रिंटर्स एण्ड पब्लिशर्स (प्रा.) लि.,** डब्ल्यू–30, ओखला, फेस–II, नई दिल्ली–110020 (दूरभाष : 26388830–32) से मुद्रित कार्यालय **'आर्य जगत्'** आर्यसमाज भवन, मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली–110001 से प्रकाशित। स्वामित्व – आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा, मन्दिर मार्ग, नई दिल्ली–110001 (दूरभाष : 23362110, 23360059) सम्पादक – **श्री पूनम सूरी**